[३७] श्री दशाश्रुतस्कन्ध (छेद)सूत्रम्

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

“दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं

[मूलं एव]

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर **(M.Com., M.Ed., Ph.D.)**

12/02/2015, गुरुवार, २०७१ महा कृष्ण ८

jain_e_library’s Net Publications

प्रत सूत्रांक [–] दीप अनुक्रम [–]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] “दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं

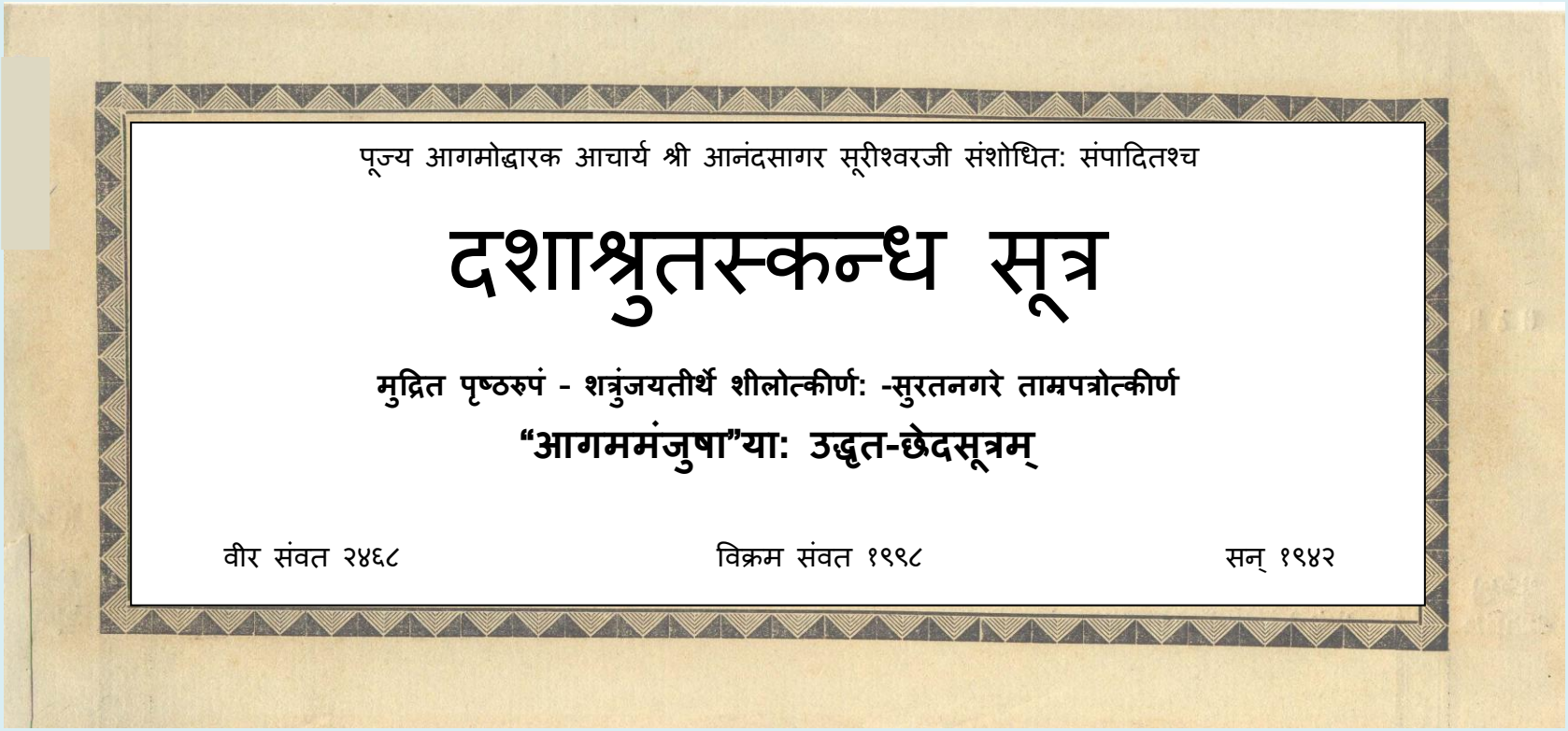

पूज्य आगमोद्धारक आचार्य श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी संशोधित: संपादितश्च

दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र

मुद्रित पृष्ठरुपं - शत्रुंजयतीर्थे शीलोत्कीर्ण: -सुरतनगरे ताम्रपत्रोत्कीर्ण

“आगममंजुषा”या: उद्धृत-छेदसूत्रम्

वीर संवत २४६८ विक्रम संवत १९९८ सन् १९४२

दशाश्रुतस्कन्ध -छेदसूत्रस्य “टाइटल पेज”

मूलांक:	दशा	पृष्ठांक:		मूलांक:	दशा	पृष्ठांक:		मूलांक:	दशा	पृष्ठांक:
००१	०१- असमाधिस्थानानि	००४		००३	०२- शबला	००४		००४	०३- आशातना	००४
००५	०४- गणिसंपत्ति	००५		०१६	०५- चित्त असमाधिस्थानानि	००६		०१८	०६- उवासगप्रतिमा	००६
०३१	०७- भिक्षुप्रतिमा	००८		०३६	०८- पर्युषणा	०१०		०३७	०९- मोहनीयस्थानानि	०१०
०३७-०५७	१०- निदान-आदि	०११		-----	----------	-----		-----	----------	-----

['दशाश्रुतस्कन्ध' - मूलं] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

पूज्यपाद आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) के संशोधन एवं संपादन से सन १९४२ (विक्रम संवत १९९८) में ४५ आगम+वैकल्पिक दो आगम+ पांच निर्युक्तिओ एवं कल्पसूत्र को मिलाकर **"आगममंजुषा"** नाम से करीब १३०० पृष्ठ छपे, जिसकी साइज़ 20x30 इंच थी | इस संपादनमें ६+१ छेदसूत्र भी पूज्यश्रीने मुद्रित करवाए | यहीं **"आगममंजुषा"** पूज्यश्री की प्रेरणा से श्री शत्रुंजयतीर्थ की तलेटीमें आगममंदिरमें आरस के पट्ट पर भी उत्कीर्ण हुई और सुरतनगरमे ताम्रपत्र पर भी अंकित हुई | हमने उसी ६+१ छेदसूत्रो को फोटो-स्केन करवाया, फोटो-स्केन कोपी को पहले ' A-4' साइज़ मे लेजाकर अलग-अलग ६+१ किताबो के रुपमे रखा, फ़िर उसी को इन्टरनेट पर भी अपलोड करवाया और हमारे प्रकाशनो कि DVD मे भी उनको स्थान दे दिया |

✣ **हमारा ये प्रयास क्यों?** ✣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, **४५-आगम सटीक** भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा आदर देखकर हमने इसी ६+१ छेदसूत्रो को प्रत-स्वरुपमें यहां सम्मिलित कर दिया, ताँकी भविष्यमे को यह् न कहे कि इस संपुटमें ३९ आगम हि है, और ६ आगम कम है |

एक **स्पेशियल फोरमेट** बनवा कर हमने बीचमे पूज्यश्री संपादित पृष्ठो को ज्यों के त्यों रख दिए, ऊपर **शीर्षस्थानमे** आगम का नाम, फिर अध्ययन या उद्देशक तथा मूलसूत्र या गाथाजो जहां प्राप्त है उसके क्रमांक लिख दिए, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन या उद्देशक तथा सूत्र या गाथा चल रहे है उसका सरलता से ज्ञान हो शके, बायीं तरफ **आगम** का **क्रम** और इसी **प्रत** का **सूत्रक्रम** दिया है, उसके साथ वहाँ **'दीप अनुक्रम'** भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके | हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रो के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ **कौंस [-]** दिए है और जहां गाथा है वहाँ **||-||** ऐसी **दो लाइन** खींची है या फिर गाथा शब्द लिख दिया है |

हमने एक अनुक्रमणिका भी बनायी है, जिसमे प्रत्येक अध्ययन आदि लिख दिये है और साथमें इस सम्पादन के पृष्ठांक भी दे दिए है, जिससे अभ्यासक व्यक्ति अपने चहिते अध्ययन या विषय तक आसानी से पहुँच शकता है | अनेक पृष्ठ के नीचे **विशिष्ठ फूटनोट** भी लिखी है, जहां उस पृष्ठ पर चल रहे ख़ास विषयवस्तु की, मूल प्रतमें रही हुई कोई-कोई मुद्रण-भूल की या क्रमांकन-भूल सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है |

अभी तो ये jain_e_library.org का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीँ सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसि को मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है| **.....मुनि दीपरत्नसागर.....**

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] "दशाश्रुतस्कन्ध" मूलं

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१]

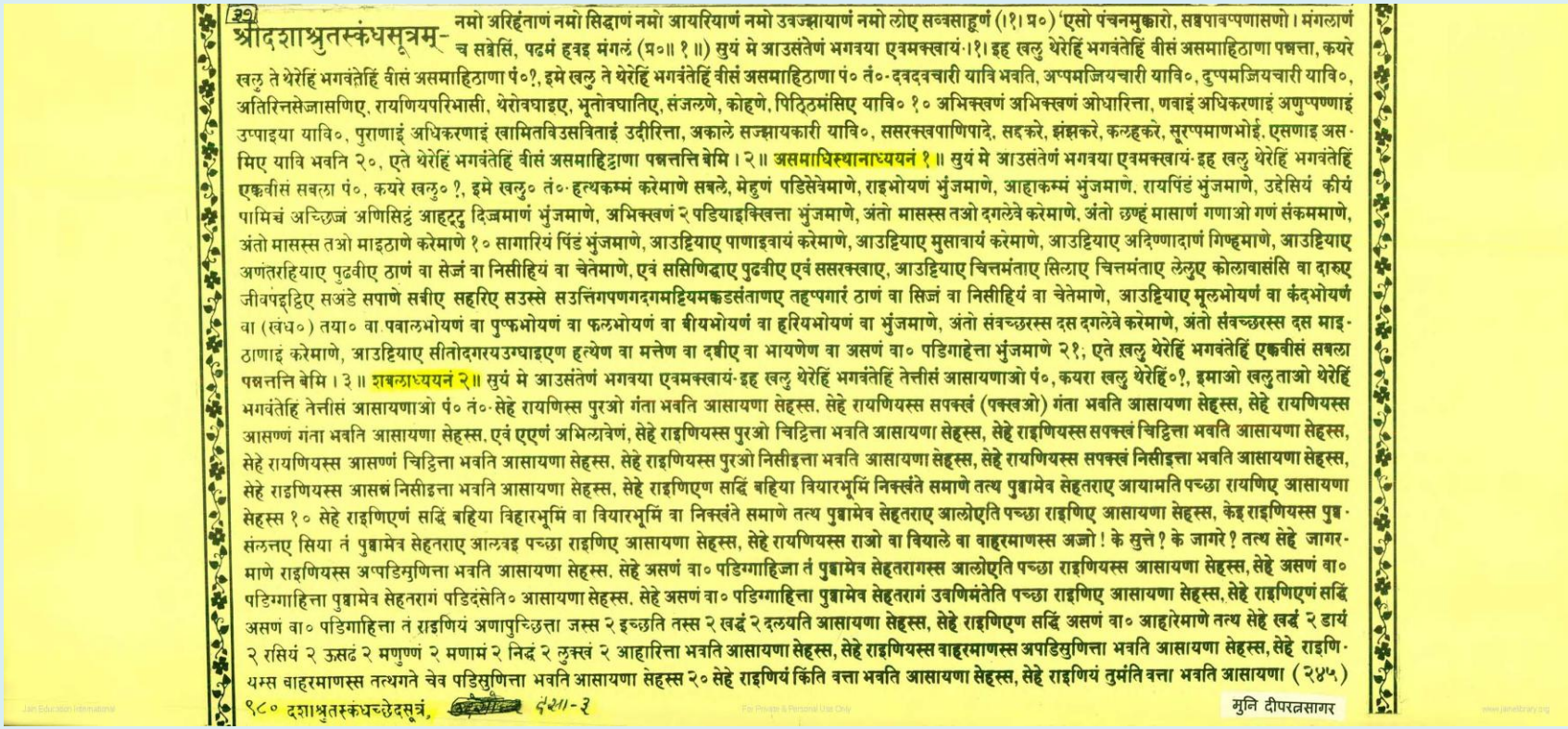

३७ श्रीदशाश्रुतस्कंधसूत्रम्- नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं (।१। प्र०) 'एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं (प्र०॥ १॥) सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-।१। इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिठाणा पन्नत्ता, कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिठाणा पं०?, इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिठाणा पं० तं०-दवदवचारी यावि भवति, अप्पमज्जियचारी यावि०, दुप्पमज्जियचारी यावि०, अतिरित्तसेज्जासणिए, रायणियपरिभासी, थेरोवघाइए, भूतोवघातिए, संजलणे, कोहणे, पिट्ठिमंसिए यावि० १० अभिक्खणं अभिक्खणं ओधारित्ता, णवाइं अधिकरणाइं अणुप्पण्णाइं उप्पाइया यावि०, पुराणाइं अधिकरणाइं खामितविउसवियाइं उदीरित्ता, अकाले सज्झायकारी यावि०, ससरक्खपाणिपादे, सद्दकरे, झंझकरे, कलहकरे, सूरप्पमाणभोई, एसणाइ असमिए यावि भवति २०, एते थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिट्ठाणा पन्नत्तत्ति बेमि। २॥ असमाधिस्थानाध्ययनं १॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं एक्कवीसं सबला पं०, कयरे खलु०?, इमे खलु० तं०-हत्थकम्मं करेमाणे सबले, मेहुणं पडिसेवेमाणे, राइभोयणं भुंजमाणे, आहाकम्मं भुंजमाणे, रायपिंडं भुंजमाणे, उद्देसियं कीयं पामिचं अच्छिज्जं अणिसिट्ठं आहट्टु दिज्जमाणं भुंजमाणे, अभिक्खणं २ पडियाइक्खित्ता भुंजमाणे, अंतो मासस्स तओ दगलेवे करेमाणे, अंतो छण्हं मासाणं गणाओ गणं संकममाणे, अंतो मासस्स तओ माइठाणे करेमाणे १० सागारियं पिंडं भुंजमाणे, आउट्टियाए पाणाइवायं करेमाणे, आउट्टियाए मुसावायं करेमाणे, आउट्टियाए अदिण्णादाणं गिण्हमाणे, आउट्टियाए अणंतरहियाए पुढवीए ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणे, एवं ससिणिद्धाए पुढवीए एवं ससरक्खाए, आउट्टियाए चित्तमंताए सिलाए चित्तमंताए लेलुए कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउस्से सउत्तिंगपणगदगमट्टियमक्कडसंताणए तहप्पगारं ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणे, आउट्टियाए मूलभोयणं वा कंदभोयणं वा (खंध०) तया० वा पवालभोयणं वा पुप्फभोयणं वा फलभोयणं वा बीयभोयणं वा हरियभोयणं वा भुंजमाणे, अंतो संवच्छरस्स दस दगलेवे करेमाणे, अंतो संवच्छरस्स दस माइठाणाइं करेमाणे, आउट्टियाए सीतोदगवियडेण हत्थेण वा मत्तेण वा दवीए वा भायणेण वा असणं वा० पडिगाहेत्ता भुंजमाणे २१; एते खलु थेरेहिं भगवंतेहिं एक्कवीसं सबला पन्नत्तत्ति बेमि। ३॥ शबलाध्ययनं २॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं तेत्तीसं आसायणाओ पं०, कयरा खलु थेरेहिं०?, इमाओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं तेत्तीसं आसायणाओ पं० तं०-सेहे रायणिस्स पुरओ गंता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे रायणियस्स सपक्खं (पक्खओ) गंता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे रायणियस्स आसण्णं गंता भवति आसायणा सेहस्स, एवं एएणं अभिलावेणं, सेहे राइणियस्स पुरओ चिट्ठित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स सपक्खं चिट्ठित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे रायणियस्स आसण्णं चिट्ठित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स पुरओ निसीइत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे रायणियस्स सपक्खं निसीइत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स आसन्नं निसीइत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणिएण सद्धिं बहिया वियारभूमिं निक्खंते समाणे तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आयामति पच्छा रायणिए आसायणा सेहस्स १० सेहे राइणिएणं सद्धिं बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खंते समाणे तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आलोएति पच्छा राइणिए आसायणा सेहस्स, केइ राइणियस्स पुव्वसंलत्तए सिया तं पुव्वामेव सेहतराए आलवइ पच्छा राइणिए आसायणा सेहस्स, सेहे रायणियस्स राओ वा वियाले वा वाहरमाणस्स अज्जो! के सुत्ते? के जागरे? तत्थ सेहे जागरमाणे राइणियस्स अप्पडिसुणित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे असणं वा० पडिग्गाहिज्जा तं पुव्वामेव सेहतरागस्स आलोएति पच्छा राइणियस्स आसायणा सेहस्स, सेहे असणं वा० पडिग्गाहित्ता पुव्वामेव सेहतरागं पडिदंसेति० आसायणा सेहस्स, सेहे असणं वा० पडिग्गाहित्ता पुव्वामेव सेहतरागं उवणिमंतेति पच्छा राइणिए आसायणा सेहस्स, सेहे राइणिएणं सद्धिं असणं वा० पडिगाहित्ता तं राइणियं अणापुच्छित्ता जस्स २ इच्छति तस्स २ खद्धं २ दलयति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणिएण सद्धिं असणं वा० आहारेमाणे तत्थ सेहे खद्धं २ डायं २ रसियं २ ऊसढं २ मणुण्णं २ मणामं २ निद्धं २ लुक्खं २ आहारित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स वाहरमाणस्स अपडिसुणित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स वाहरमाणस्स तत्थगते चेव पडिसुणित्ता भवति आसायणा सेहस्स २० सेहे राइणियं किंति वत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियं तुमंति वत्ता भवति आसायणा (२४५)

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र दशा- १ आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [४] दीप अनुक्रम [४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] "दशाश्रुतस्कन्ध" मूलं

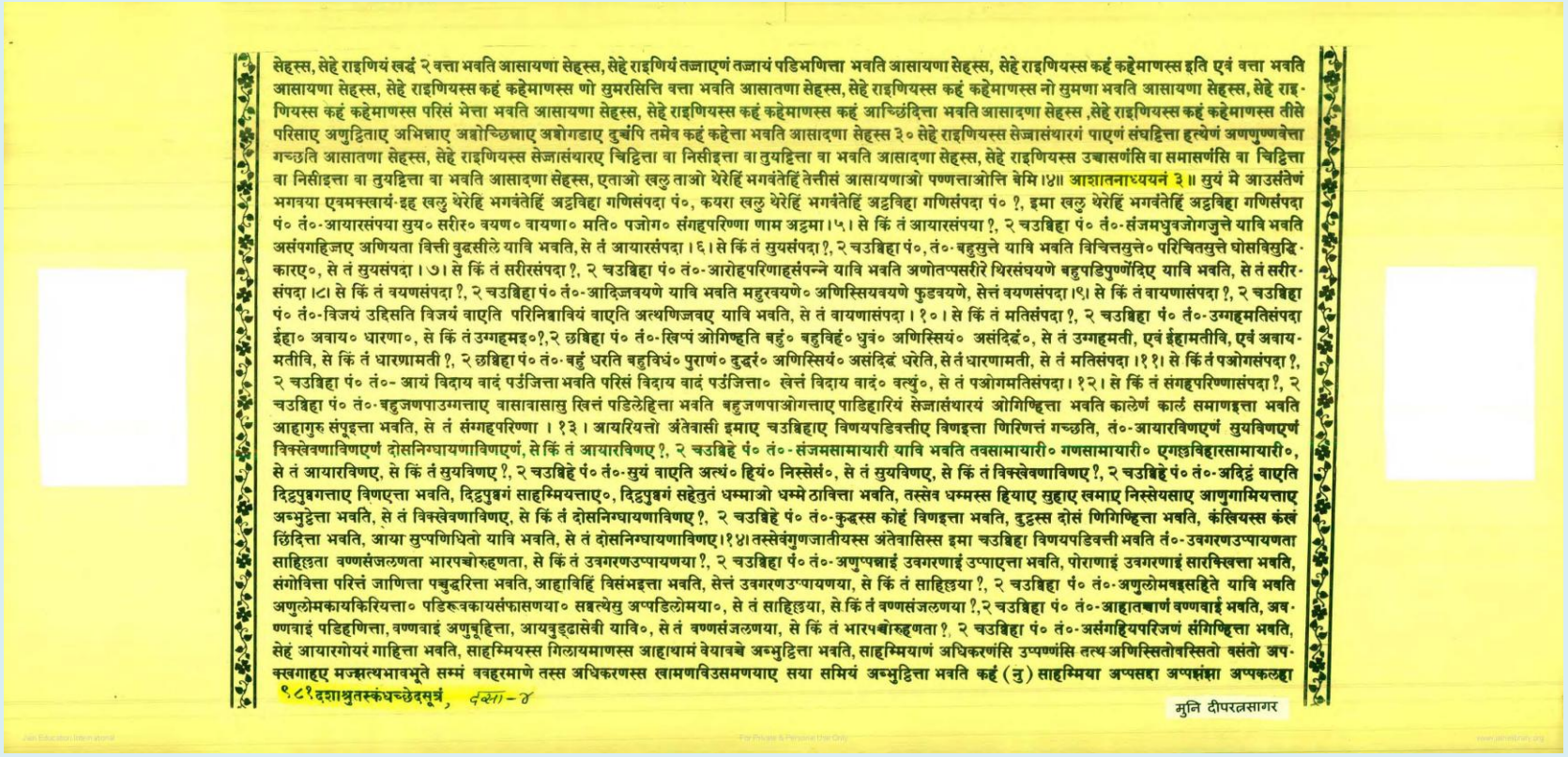

सेहस्स, सेहे राइणियं खद्धं २ वत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियं तज्जाएणं तज्जायं पडिभणित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स इति एवं वत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स णो सुमरसित्ति वत्ता भवति आसातणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स नो सुमणा भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स परिसं भेत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स कहं आच्छिंदित्ता भवति आसादणा सेहस्स ,सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स तीसे परिसाए अणुट्ठिताए अभिन्नाए अवोच्छिन्नाए अबोगडाए दुवंपि तमेव कहं कहेत्ता भवति आसादणा सेहस्स ३० सेहे राइणियस्स सेज्जासंथारगं पाएणं संघट्टित्ता हत्थेणं अणणुण्णवेत्ता गच्छति आसातणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स सेज्जासंथारए चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति आसादणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स उच्चासणंसि वा समासणंसि वा चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति आसादणा सेहस्स, एताओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं तेत्तीसं आसायणाओ पण्णत्ताओत्ति बेमि ।४॥ आशातनाध्ययनं ३ ॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पं०, कयरा खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पं० ?, इमा खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पं० तं०-आयारसंपया सुय० सरीर० वयण० वायणा० मति० पजोग० संगहपरिण्णा णाम अट्ठमा ।५। से किं तं आयारसंपया ?, २ चउव्विहा पं० तं०-संजमधुवजोगजुत्ते यावि भवति असंपगहिअप्पा अणियत्ता वित्ती बुद्धसीले यावि भवति, से तं आयारसंपदा ।६। से किं तं सुयसंपदा ?, २ चउव्विहा पं०, तं०-बहुसुत्ते यावि भवति विचित्तसुत्ते० परिचितसुत्ते घोसविसुद्धिकारए०, से तं सुयसंपदा ।७। से किं तं सरीरसंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०-आरोहपरिणाहसंपन्ने यावि भवति अणोतप्पसरीरे थिरसंघयणे बहुपडिपुण्णेंदिए यावि भवति, से तं सरीरसंपदा ।८। से किं तं वयणसंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०-आदिज्जवयणे यावि भवति महुरवयणे० अणिस्सियवयणे फुडवयणे, सेत्तं वयणसंपदा ।९। से किं तं वायणासंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०-विजयं उद्दिसति विजयं वाएति परिनिव्वावियं वाएति अत्थणिज्जवए यावि भवति, से तं वायणासंपदा । १० । से किं तं मतिसंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०-उग्गहमतिसंपदा ईहा० अवाय० धारणा०, से किं तं उग्गहमइ०?,२ छव्विहा पं० तं०-खिप्पं ओगिण्हति बहुं० बहुविहं० धुवं० अणिस्सियं० असंदिद्धं०, से तं उग्गहमती, एवं ईहामतीवि, एवं अवायमतीवि, से किं तं धारणामती ?, २ छव्विहा पं० तं०-बहुं धरति बहुविधं० पुराणं० दुद्धरं० अणिस्सियं० असंदिद्धं धरेति, से तं धारणामती, से तं मतिसंपदा ।११। से किं तं पओगसंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०- आयं विदाय वादं पउंजित्ता भवति परिसं विदाय वादं पउंजित्ता० खेत्तं विदाय वादं० वत्थुं०, से तं पओगमतिसंपदा । १२। से किं तं संगहपरिण्णासंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०-बहुजणपाउग्गत्ताए वासावासासु खेत्तं पडिलेहित्ता भवति बहुजणपाओग्गत्ताए पाडिहारियं सेज्जासंथारयं ओगिण्हित्ता भवति कालेणं कालं समाणइत्ता भवति आहागुरु संपूइत्ता भवति, से तं संग्गहपरिण्णा । १३ । आयरियत्तो अंतेवासी इमाए चउव्विहाए विणयपडिवत्तीए विणइत्ता णिरिणत्तं गच्छति, तं०-आयारविणएणं सुयविणएणं विक्खेवणाविणएणं दोसनिग्घायणाविणएणं, से किं तं आयारविणए ?, २ चउव्विहे पं० तं०-संजमसामायारी यावि भवति तवसामायारी० गणसामायारी० एगल्लविहारसामायारी०, से तं आयारविणए, से किं तं सुयविणए ?, २ चउव्विहे पं० तं०-सुयं वाएति अत्थं० हियं० निस्सेसं०, से तं सुयविणए, से किं तं विक्खेवणाविणए ?, २ चउव्विहे पं० तं०-अदिट्ठं वाएति दिट्ठपुव्वगत्ताए विणएत्ता भवति, दिट्ठपुव्वगं साहम्मियत्ताए०, दिट्ठपुव्वगं सहेतुतं धम्माओ धम्मे ठावित्ता भवति, तस्सेव धम्मस्स हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए अब्भुट्टेत्ता भवति, से तं विक्खेवणाविणए, से किं तं दोसनिग्घायणाविणए ?, २ चउव्विहे पं० तं०-कुद्धस्स कोहं विणइत्ता भवति, दुट्ठस्स दोसं णिगिण्हित्ता भवति, कंखियस्स कंखं छिंदित्ता भवति, आया सुप्पणिधिते यावि भवति, से तं दोसनिग्घायणाविणए।१४।तस्सेवंगुणजातीयस्स अंतेवासिस्स इमा चउव्विहा विणयपडिवत्ती भवति तं०-उवगरणउप्पायणता साहिल्लता वण्णसंजलणता भारपच्चोरुहणता, से किं तं उवगरणउप्पायणया ?, २ चउव्विहा पं० तं०-अणुप्पन्नाइं उवगरणाइं उप्पाएत्ता भवति, पोराणाइं उवगरणाइं सारक्खित्ता भवति, संगोवित्ता परित्तं जाणित्ता पच्चुद्धरित्ता भवति, आहाविहिं विसंभइत्ता भवति, सेत्तं उवगरणउप्पायणया, से किं तं साहिल्लया ?, २ चउव्विहा पं० तं०-अणुलोमवइसहिते यावि भवति अणुलोमकायकिरियत्ता० पडिरूवकायसंफासणया० सव्वत्थेसु अप्पडिलोमया०, से तं साहिल्लया, से किं तं वण्णसंजलणया ?,२ चउव्विहा पं० तं०-आहातच्चाणं वण्णवाई भवति, अवण्णवाइं पडिहणित्ता, वण्णवाइं अणुवूहित्ता, आयवुड्ढासेवी यावि०, से तं वण्णसंजलणया, से किं तं भारपच्चोरुहणता ?, २ चउव्विहा पं० तं०-असंगहियपरिजणं संगिण्हित्ता भवति, सेहं आयारगोयरं गाहित्ता भवति, साहम्मियस्स गिलायमाणस्स आहाथामं वेयावच्चे अब्भुट्टित्ता भवति, साहम्मियाणं अधिकरणंसि उप्पण्णंसि तत्थ अणिस्सितोवस्सितो वसंतो अपक्खगाहए मज्झत्थभावभूते सम्मं ववहरमाणे तस्स अधिकरणस्स खामणविउसमणयाए सया समियं अब्भुट्टित्ता भवति कहं (नु) साहम्मिया अप्पसद्दा अप्पझंझा अप्पकलहा

९८१दशाश्रुतस्कंधच्छेदसूत्रं, दशा-४

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र दशा- ४ आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [१५] + गाथा: ‖१-१७‖ दीप अनुक्रम [१५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] "दशाश्रुतस्कन्ध" मूलं

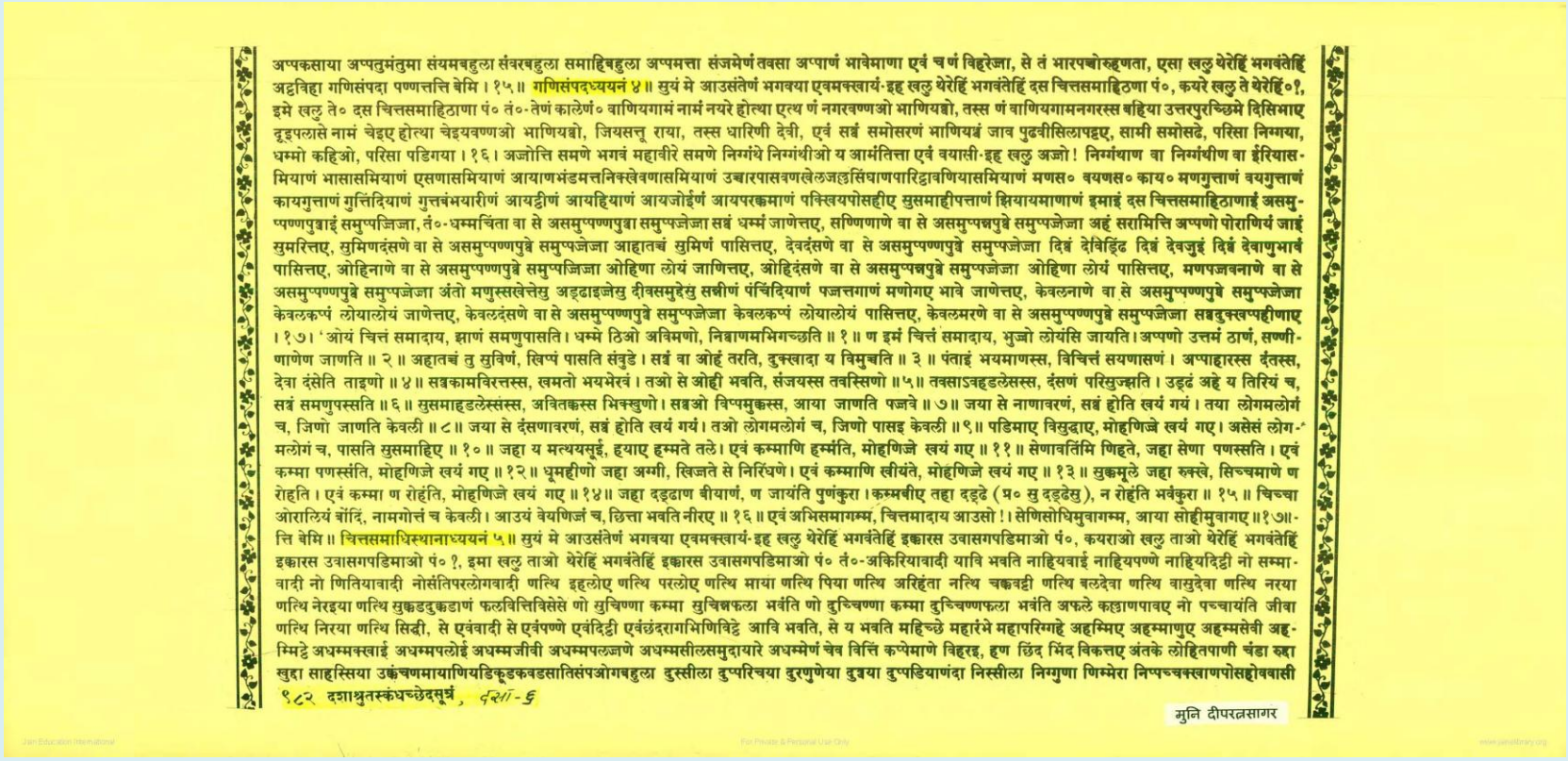

अप्पकसाया अप्पतुमंतुमा संयमबहुला संवरबहुला समाहिबहुला अप्पमत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा एवं च णं विहरेज्जा, से तं भारपच्चोरुहणता, एसा खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पण्णत्तत्ति बेमि । १५॥ गणिसंपदध्ययनं ४॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस चित्तसमाहिठाणा पं०, कयरे खलु ते थेरेहिं०१, इमे खलु ते० दस चित्तसमाहिठाणा पं० तं०-तेणं कालेणं० वाणियगामं नामं नयरे होत्था एत्थ णं नगरवण्णओ भाणियव्वो, तस्स णं वाणियगामनगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए दूइपलासे नामं चेइए होत्था चेइयवण्णओ भाणियव्वो, जियसत्तू राया, तस्स धारिणी देवी, एवं सव्वं समोसरणं भाणियव्वं जाव पुढवीसिलापट्टए, सामी समोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया । १६। अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य आमंतित्ता एवं वयासी-इह खलु अज्जो! निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा ईरियासमियाणं भासासमियाणं एसणासमियाणं आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमियाणं उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमियाणं मणस० वयणस० काय० मणगुत्ताणं वयगुत्ताणं कायगुत्ताणं गुत्तिंदियाणं गुत्तबंभयारीणं आयट्ठीणं आयहियाणं आयजोईणं आयपरक्कमाणं पक्खियपोसहीए सुसमाहीपत्ताणं झियायमाणाणं इमाइं दस चित्तसमाहिठाणाइं असमुप्पण्णपुव्वाइं समुप्पज्जिज्जा, तं०-धम्मचिंता वा से असमुप्पण्णपुव्वा समुप्पज्जेज्जा सव्वं धम्मं जाणेत्तए, सण्णिणाणे वा से असमुप्पन्नपुव्वे समुप्पज्जेज्जा अहं सरामित्ति अप्पणो पोराणियं जाइं सुमरित्तए, सुमिणदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा आहातच्चं सुमिणं पासित्तए, देवदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए, ओहिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा ओहिणा लोयं जाणित्तए, ओहिदंसणे वा से असमुप्पन्नपुव्वे समुप्पज्जेज्जा ओहिणा लोयं पासित्तए, मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा अंतो मणुस्सखेत्तेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु सन्नीणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगए भावे जाणेत्तए, केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवलकप्पं लोयालोयं जाणेत्तए, केवलदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवलकप्पं लोयालोयं पासित्तए, केवलमरणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा सव्वदुक्खप्पहीणाए । १७। 'ओयं चित्तं समादाय, झाणं समणुपासति। धम्मे ठिओ अविमणो, निव्वाणमभिगच्छति ॥ १ ॥ ण इमं चित्तं समादाय, भुज्जो लोयंसि जायति। अप्पणो उत्तमं ठाणं, सण्णीणाणेण जाणति ॥ २ ॥ अहातच्चं तु सुविणं, खिप्पं पासति संवुडे। सव्वं वा ओहं तरति, दुक्खादा य विमुच्चति ॥ ३ ॥ पंताइं भयमाणस्स, विचित्तं सयणासणं। अप्पाहारस्स दंतस्स, देवा दंसेति ताइणो ॥ ४ ॥ सव्वकामविरत्तस्स, खमतो भयभेरवं। तओ से ओही भवति, संजयस्स तवस्सिणो ॥ ५ ॥ तवसाऽवहडलेसस्स, दंसणं परिसुज्झति। उड्ढं अहे य तिरियं च, सव्वं समणुपस्सति ॥ ६ ॥ सुसमाहडलेस्सस्स, अवितक्कस्स भिक्खुणो। सव्वओ विप्पमुक्कस्स, आया जाणति पज्जवे ॥ ७ ॥ जया से नाणावरणं, सव्वं होति खयं गयं। तया लोगमलोगं च, जिणो जाणति केवली ॥ ८ ॥ जया से दंसणावरणं, सव्वं होति खयं गयं। तओ लोगमलोगं च, जिणो पासइ केवली ॥ ९ ॥ पडिमाए विसुद्धाए, मोहणिज्जे खयं गए। असेसं लोग-मलोगं च, पासति सुसमाहिए ॥ १० ॥ जहा य मत्थयसूई, हयाए हम्मते तले। एवं कम्माणि हम्मंति, मोहणिज्जे खयं गए ॥ ११ ॥ सेणावतिंमि णिहते, जहा सेणा पणस्सति। एवं कम्मा पणस्संति, मोहणिज्जे खयं गए ॥ १२ ॥ धूमहीणो जहा अग्गी, खिज्जते से निरिंधणे। एवं कम्माणि खीयंते, मोहणिज्जे खयं गए ॥ १३ ॥ सुक्कमूले जहा रुक्खे, सिच्चमाणे ण रोहति। एवं कम्मा ण रोहंति, मोहणिज्जे खयं गए ॥ १४ ॥ जहा दड्ढाण बीयाणं, ण जायंति पुणंकुरा। कम्मबीए तहा दड्ढे (प्र० सु दड्ढेसु), न रोहंति भवंकुरा ॥ १५ ॥ चिच्चा ओरालियं बोंदिं, नामगोत्तं च केवली। आउयं वेयणिज्जं च, छित्ता भवति नीरए ॥ १६ ॥ एवं अभिसमागम्म, चित्तमादाय आउसो!। सेणिसोधिमुवागम्म, आया सोहीमुवागए ॥ १७ ॥-त्ति बेमि ॥ चित्तसमाधिस्थानाध्ययनं ५॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं इक्कारस उवासगपडिमाओ पं०, कयराओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं इक्कारस उवासगपडिमाओ पं० १, इमा खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं इक्कारस उवासगपडिमाओ पं० तं०-अकिरियावादी यावि भवति नाहियवाई नाहियपण्णे नाहियदिट्ठी नो सम्मावादी नो णितियावादी नोसंतिपरलोगवादी णत्थि इहलोए णत्थि परलोए णत्थि माया णत्थि पिया णत्थि अरिहंता नत्थि चक्कवट्टी णत्थि बलदेवा णत्थि वासुदेवा णत्थि नरया णत्थि नेरइया णत्थि सुकडदुक्कडाणं फलवित्तिविसेसे णो सुचिण्णा कम्मा सुचिन्नफला भवंति णो दुच्चिण्णा कम्मा दुच्चिण्णफला भवंति अफले कल्लाणपावए नो पच्चायंति जीवा णत्थि निरया णत्थि सिद्धी, से एवंवादी से एवंपण्णे एवंदिट्ठी एवंछंदरागमिणिविट्ठे आवि भवति, से य भवति महिच्छे महारंभे महापरिग्गहे अहम्मिए अहम्माणुए अहम्मसेवी अहम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्मपलोई अधम्मजीवी अधम्मपलज्जणे अधम्मसीलसमुदायारे अधम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ, हण छिंद भिंद विकत्तए अंतके लोहितपाणी चंडा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया उक्कंचणमायाणियडिकूडकवडसातिसंपओगबहुला दुस्सीला दुप्परिचया दुरणुणेया दुव्वया दुप्पडियाणंदा निस्सीला निग्गुणा णिम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासी

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र दशा- ६ आरभ्यते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] “दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं

प्रत सूत्रांक [१८]

दीप अनुक्रम [३५]

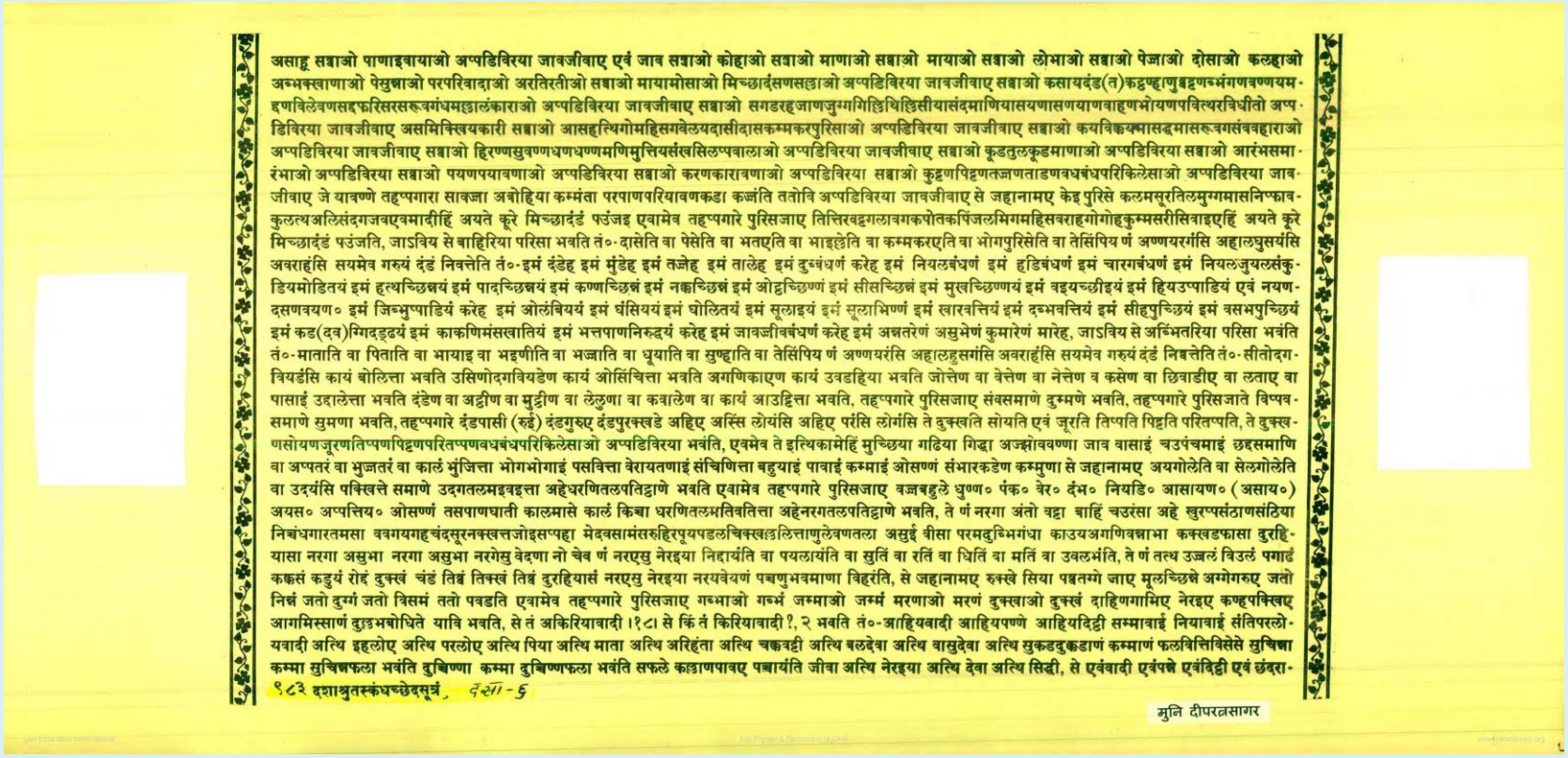

असाहू सव्वाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरिया जावजीवाए एवं जाव सव्वाओ कोहाओ सव्वाओ माणाओ सव्वाओ मायाओ सव्वाओ लोभाओ सव्वाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुन्नाओ परपरिवादाओ अरतिरतीओ सव्वाओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ अप्पडिविरिया जावजीवाए सव्वाओ कसायदंड(त)कट्ठण्हाणुव्वट्टणब्भंगणवण्णयमद्दणविलेवणसद्दफरिससरूवगंधमल्लालंकाराओ अप्पडिविरिया जावजीवाए सव्वाओ सगडरहजाणजुग्गगिल्लिथिल्लिसीयासंदमाणियासयणासणयाणवाहणभोयणपवित्थरविधीतो अप्पडिविरिया जावजीवाए असमिक्खियकारी सव्वाओ आसहत्थिगोमहिसगवेलयदासीदासकम्मकरपुरिसाओ अप्पडिविरिया जावजीवाए सव्वाओ कयविक्कयम्मासद्धमासरूवगसंववहाराओ अप्पडिविरिया जावजीवाए सव्वाओ हिरण्णसुवण्णधणधण्णमणिमुत्तियसंखसिलप्पवालाओ अप्पडिविरिया जावजीवाए सव्वाओ कूडतुलकूडमाणाओ अप्पडिविरिया सव्वाओ आरंभसमारंभाओ अप्पडिविरिया सव्वाओ पयणपयावणाओ अप्पडिविरिया सव्वाओ करणकारावणाओ अप्पडिविरिया सव्वाओ कुट्टणपिट्टणतज्जणताडणवधबंधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरिया जावजीवाए जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरियावणकडा कज्जंति ततोवि अप्पडिविरिया जावजीवाए से जहानामए केइ पुरिसे कलमसूरतिलमुग्गमासनिप्फावकुलत्थआलिसंदगजवएवमादीहिं अयते कूरे मिच्छादंडं पउंजइ एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए तित्तिरवट्टगलावगकपोतकपिंजलमिगमहिसवराहगोगोहकुम्मसरीसिवाइएहिं अयते कूरे मिच्छादंडं पउंजति, जाऽविय से बाहिरिया परिसा भवति तं०-दासेति वा पेसेति वा भतएति वा भाइल्लेति वा कम्मकरएति वा भोगपुरिसेति वा तेसिंपिय णं अण्णयरगंसि अहालहुसयंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं निवत्तेति तं०-इमं दंडेह इमं मुंडेह इमं तज्जेह इमं तालेह इमं दुब्बंधणं करेह इमं नियलबंधणं इमं हडिबंधणं इमं चारगबंधणं इमं नियलजुयलसंकुडियमोडितयं इमं हत्थच्छिन्नयं इमं पादच्छिन्नयं इमं कण्णच्छिन्नं इमं नक्कच्छिन्नं इमं ओट्ठच्छिण्णं इमं सीसच्छिन्नं इमं मुखच्छिण्णयं इमं वइयच्छीइयं इमं हियउप्पाडियं एवं नयणदसणवयण० इमं जिब्भुप्पाडियं करेह इमं ओलंबिययं इमं घंसिययं इमं घोलितयं इमं सूलाइयं इमं सूलाभिण्णं इमं खारवत्तियं इमं दब्भवत्तियं इमं सीहपुच्छियं इमं वसभपुच्छियं इमं कड(दव)ग्गिदड्ढयं इमं काकणिमंसखावियं इमं भत्तपाणनिरुद्धयं करेह इमं जावज्जीवबंधणं करेह इमं अन्नतरेणं असुभेणं कुमारेणं मारेह, जाऽवियस से अब्भिंतरिया परिसा भवति तं०-माताति वा पिताति वा भायाइ वा भइणीति वा भज्जाति वा धूयाति वा सुण्हाति वा तेसिंपिय णं अण्णयरंसि अहालहुसगंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं निवत्तेति तं०-सीतोदगवियडंसि कायं बोलित्ता भवति उसिणोदगवियडेण कायं ओसिंचित्ता भवति अगणिकाएण कायं उवडहिया भवति जोत्तेण वा वेत्तेण वा नेत्तेण व कसेण वा छिवाडीए वा लताए वा पासाइं उद्दालेत्ता भवति दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा कायं आउट्टित्ता भवति, तहप्पगारे पुरिसजाए संवसमाणे दुम्मणे भवति, तहप्पगारे पुरिसजाते विप्पवसमाणे सुमणा भवति, तहप्पगारे दंडपासी (रुई) दंडगुरुए दंडपुरक्खडे अहिए अस्सिं लोयंसि अहिए परंसि लोगंसि ते दुक्खंति सोयंति जूरंति तिप्पंति पिट्टंति परितप्पंति, ते दुक्खणसोयणजूरणतिप्पणपिट्टणपरितप्पणवधबंधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवंति, एवमेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गढिया गिद्धा अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाणि वा अप्पतरं वा भुज्जतरं वा कालं भुंजित्ता भोगभोगाइं पसवित्ता वेरायतणाइं संचिणित्ता बहुयाइं पावाइं कम्माइं ओसण्णं संभारकडेण कम्मुणा से जहानामए अयगोलेति वा सेलगोलेति वा उदयंसि पक्खित्ते समाणे उदगतलमइवइत्ता अहेधरणितलपतिट्ठाणे भवति एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए वज्जबहुले धुण्ण० पंक० वेर० दंभ० नियडि० आसायण० (असाय०) अयस० अप्पत्तिय० ओसण्णं तसपाणघाती कालमासे कालं किच्चा धरणितलमतिवत्तित्ता अहेनरगतलपतिट्ठाणे भवति, ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधगारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसप्पहा मेदवसामंसरुहिरपूयपडलचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा काउयअगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा नरगा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदणा नो चेव णं नरएसु नेरइया निहायंति वा पयलायंति वा सुतिं वा रतिं वा धितिं वा मतिं वा उवलभंति, ते णं तत्थ उज्जलं विउलं पगाढं कक्कसं कडुयं रोद्दं दुक्खं चंडं तिव्वं तिक्खं तिव्वं दुरहियासं नरएसु नेरइया नरयवेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति, से जहानामए रुक्खे सिया पव्वतग्गे जाए मूलच्छिन्ने अग्गेगरुए जतो निन्नं जतो दुग्गं जतो विसमं ततो पवडति एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए गब्भाओ गब्भं जम्माओ जम्मं मरणाओ मरणं दुक्खाओ दुक्खं दाहिणगामिए नेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साणं दुल्लभबोधिते यावि भवति, से तं अकिरियावादी ।१८। से किं तं किरियावादी ?, २ भवति तं०-आहियवादी आहियपण्णे आहियदिट्ठी सम्मावाई नियावाई संतिपरलोयवादी अत्थि इहलोए अत्थि परलोए अत्थि पिया अत्थि माता अत्थि अरिहंता अत्थि चक्कवट्टी अत्थि बलदेवा अत्थि वासुदेवा अत्थि सुकडदुक्कडाणं कम्माणं फलवित्तिविसेसे सुचिन्ना कम्मा सुचिन्नफला भवंति दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवंति सफले कल्लाणपावए पच्चायंति जीवा अत्थि नेरइया अत्थि देवा अत्थि सिद्धी, से एवंवादी एवंपन्ने एवंदिट्ठी एवं छंदरा-

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [१९] दीप अनुक्रम [३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] “दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं

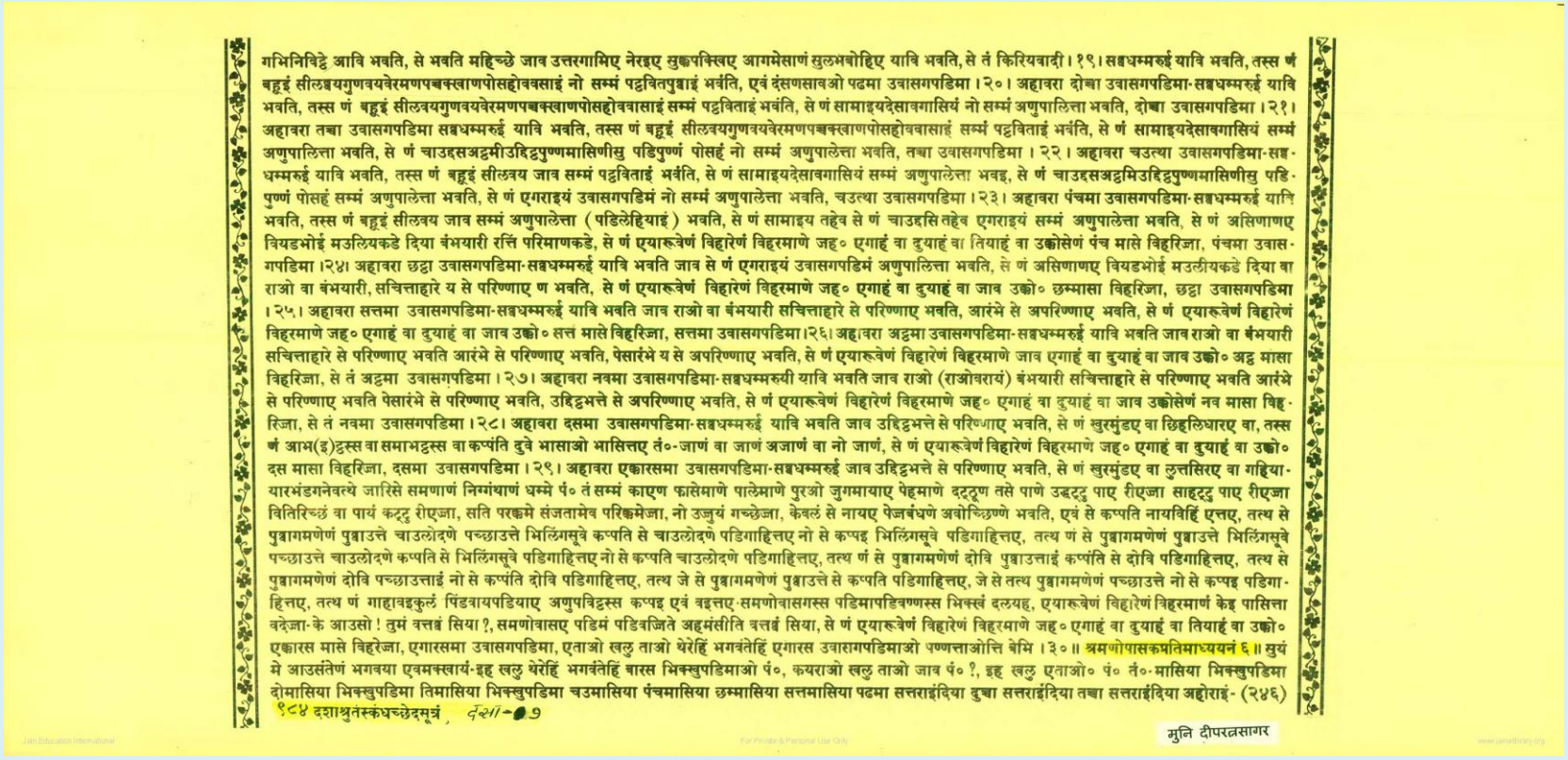

गभिनिविट्ठे आवि भवति, से भवति महिच्छे जाव उत्तरगामिए नेरइए सुक्कपक्खिए आगमेसाणं सुलभबोहिए यावि भवति, से तं किरियावादी। १९। सव्वधम्मरुई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलव्वयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववसाइं नो सम्मं पट्ठवितपुव्वाइं भवंति, एवं दंसणसावओ पढमा उवासगपडिमा। २०। अहावरा दोच्चा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलवयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं सम्मं पट्ठविताइं भवंति, से णं सामाइयदेसावगासियं नो सम्मं अणुपालित्ता भवति, दोच्चा उवासगपडिमा। २१। अहावरा तच्चा उवासगपडिमा सव्वधम्मरुई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलवयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं सम्मं पट्ठविताइं भवंति, से णं सामाइयदेसावगासियं सम्मं अणुपालित्ता भवति, से णं चाउद्दसअट्ठमीउद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं नो सम्मं अणुपालेत्ता भवति, तच्चा उवासगपडिमा। २२। अहावरा चउत्था उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलव्वय जाव सम्मं पट्ठविताइं भवंति, से णं सामाइयदेसावगासियं सम्मं अणुपालेत्ता भवइ, से णं चाउद्दसअट्ठमिउद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेत्ता भवति, से णं एगराइयं उवासगपडिमं नो सम्मं अणुपालेत्ता भवति, चउत्था उवासगपडिमा। २३। अहावरा पंचमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलव्वय जाव सम्मं अणुपालेत्ता (पडिलेहियाइं) भवति, से णं सामाइय तहेव से णं चाउद्दसि तहेव एगराइयं सम्मं अणुपालेत्ता भवति, से णं असिणाणए वियडभोई मउलियकडे दिया बंभयारी रत्तिं परिमाणकडे, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं पंच मासे विहरिजा, पंचमा उवासगपडिमा। २४। अहावरा छट्ठा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति जाव से णं एगराइयं उवासगपडिमं अणुपालित्ता भवति, से णं असिणाणए वियडभोई मउलीयकडे दिया वा राओ वा बंभयारी, सचित्ताहारे य से परिण्णाए ण भवति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्को० छम्मासा विहरिजा, छट्ठा उवासगपडिमा। २५। अहावरा सत्तमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति जाव राओ वा बंभयारी सचित्ताहारे से परिण्णाए भवति, आरंभे से अपरिण्णाए भवति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्को० सत्त मासे विहरिजा, सत्तमा उवासगपडिमा। २६। अहावरा अट्ठमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति जाव राओ वा बंभयारी सचित्ताहारे से परिण्णाए भवति आरंभे से परिण्णाए भवति, पेसारंभे य से अपरिण्णाए भवति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जाव एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्को० अट्ठ मासा विहरिजा, से तं अट्ठमा उवासगपडिमा। २७। अहावरा नवमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुयी यावि भवति जाव राओ (राओवरायं) बंभयारी सचित्ताहारे से परिण्णाए भवति आरंभे से परिण्णाए भवति पेसारंभे से परिण्णाए भवति, उद्दिट्ठभत्ते से अपरिण्णाए भवति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्कोसेणं नव मासा विहरिजा, से तं नवमा उवासगपडिमा। २८। अहावरा दसमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति जाव उद्दिट्ठभत्ते से परिण्णाए भवति, से णं खुरमुंडए वा छिहलिधारए वा, तस्स णं आभ(इ)ट्ठस्स वा समाभट्ठस्स वा कप्पंति दुवे भासाओ भासित्तए तं०-जाणं वा जाणं अजाणं वा नो जाणं, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा उक्को० दस मासा विहरिजा, दसमा उवासगपडिमा। २९। अहावरा एक्कारसमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई जाव उद्दिट्ठभत्ते से परिण्णाए भवति, से णं खुरमुंडए वा लुत्तसिरए वा गहियारयहरणपडिग्गहकारवेसमणाणं निग्गंथाणं धम्मे पं० तं सम्मं काएण फासेमाणे पालेमाणे पुरओ जुगमायाए पेहमाणे दट्ठूणं तसे पाणे उद्धट्टु पाए रीएज्जा साहट्टु पाए रीएज्जा वितिरिच्छं वा पायं कट्टु रीएज्जा, सति परक्कमे संजतामेव परिक्कमेज्जा, नो उजुयं गच्छेज्जा, केवलं से नायए पेज्जबंधणे अवोच्छिण्णे भवति, एवं से कप्पति नायविहिं एत्तए, तत्थ से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते चाउलोदणे पच्छाउत्ते भिलिंगसूवे कप्पति से चाउलोदणे पडिगाहित्तए नो से कप्पइ भिलिंगसूवे पडिगाहित्तए, तत्थ णं से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते भिलिंगसूवे पच्छाउत्ते चाउलोदणे कप्पति से भिलिंगसूवे पडिगाहित्तए नो से कप्पति चाउलोदणे पडिगाहित्तए, तत्थ णं से पुव्वागमणेणं दोवि पुव्वाउत्ताइं कप्पंति से दोवि पडिगाहित्तए, तत्थ से पुव्वागमणेणं दोवि पच्छाउत्ताइं नो से कप्पंति दोवि पडिगाहित्तए, तत्थ जे से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते से कप्पति पडिगाहित्तए, जे से तत्थ पुव्वागमणेणं पच्छाउत्ते नो से कप्पइ पडिगाहित्तए, तत्थ णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठस्स कप्पइ एवं वइत्तए-समणोवासगस्स पडिमापडिवण्णस्स भिक्खं दलयह, एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणं केइ पासित्ता वदेज्जा-के आउसो! तुमं वत्तव्वं सिया?, समणोवासए पडिमं पडिवज्जिते अहमंसीति वत्तव्वं सिया, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्को० एक्कारस मासे विहरेज्जा, एगारसमा उवासगपडिमा, एताओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं एगारस उवासगपडिमाओ पण्णत्ताओत्ति बेमि। ३०॥ श्रमणोपासकप्रतिमाध्ययनं ६॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं बारस भिक्खुपडिमाओ पं०, कयराओ खलु ताओ जाव पं०?, इह खलु एताओ० पं० तं०-मासिया भिक्खुपडिमा दोमासिया भिक्खुपडिमा तिमासिया भिक्खुपडिमा चउमासिया पंचमासिया छम्मासिया सत्तमासिया पढमा सत्तराइंदिया दुच्चा सत्तराइंदिया तच्चा सत्तराइंदिया अहोराइं- (२४६)

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र दशा- ७ आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [३१]

दीप अनुक्रम [४८]

दिया एगराइंदिया भिक्खुपडिमा। ३१। मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केई उवसग्गा उप्पज्जंति तं०-दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्ख-जोणिया वा ते उप्पण्णे सम्मं सहति खमति तितिक्खति अहियासेति, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पइ एगा दत्ती भोयणस्स पडिगाहित्तए एगा पाणगस्स, अण्णाउंछं सुद्धोवहडं निज्जूहित्ता बहवे दुप्पयचउप्पयसमणमाहणअतिहिकिविणवणिमगा, कप्पइ से एगस्स भुंजमाणस्स पडिगाहित्तए, णो दुण्हं णो तिण्हं णो चउण्हं णो पंचण्हं णो गुव्विणीए णो बालवच्छाए णो दारगं पेज्जमाणीए नो अंतो एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए नो बाहिं एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए, एगं पाए अंतो किच्चा एगं पायं बाहिं किच्चा एलुयं विक्खंभइत्ता एवं दलयति एवं से कप्पति पडिगाहित्तए, एवं से नो दलयति एवं से नो कप्पइ पडिगाहित्तए, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स तओ गोयरकाला पं० तं०-आदिमे मज्झिमे चरिमे, आदि चरेज्जा णो मज्झे चरिज्जा णो चरिमे चरिज्जा, मज्झे चरेज्जा नो आइ चरेज्जा नो चरिमे चरेज्जा, चरिमं चरेज्जा नो आदिमं चरेज्जा नो मज्झे चरेज्जा, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स छव्विहा गोयरचरिया पं० तं०-पेला अद्धपेला गोमुत्तिया पयंगवीथिका संबुक्कावट्टा गंतुंपच्चागया, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स जत्थ णं केइ जाणति कप्पइ से तत्थ एगराइयं वसित्तए, जत्थ णं केइ न जाणइ से कप्पति तत्थ एगरायं वा दुरायं वा वसित्तए, नो कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जं तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसति से संतरा छेदे वा परिहारे वा, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स कप्पंति चत्तारि भासाओ भासित्तए तं०-जायणी पुच्छणी अणुण्णवणी पुट्ठस्स वागरणी, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स० कप्पंति तओ उवस्सगा पडिलेहित्तए तं०-अहे आरामगिहंसि वा अहे वियडगि-हंसि वा अहे रुक्खमूलगेहंसि वा, मासियं णं भिक्खु० कप्पन्ति तओ उवस्सगा अणुण्णवित्तए तं०-अहे आरामगिहं अहे वियडगिहं अहे रुक्खमूलगिहं, मासियण्णं० कप्पइ तओ उवस्सया उवायणावित्तए तं चेव, मासियं णं० कप्पइ तओ संथारगा पडिलेहित्तए तं०-पुढवीसिलं वा कट्ठसिलं वा आहासंथडमेव, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स कप्पइ तओ संथारा अणु-ण्णवेत्तए तं चेव, मासियं णं० कप्पंति तओ संथारा ओवायणावित्तए तं चेव, मासियं० इत्थी उवस्सयं उवागच्छिज्जा से इत्थी एवं पुरिसे णो से कप्पइ तं पडुच्च निक्खमित्तए वा पविसि-त्तए वा, मासियं० जाव पडिवण्णस्स केइ उवस्सयं अगणिकाएण झामेज्जा नो से कप्पइ तं पडुच्च निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, तत्थ णं केइ वधाय असिं गहाय आगच्छेज्जा जाव से नो कप्पइ तं पडुच्च अलंवित्तए वा पलंवित्तए वा, कप्पइ से आहारियं रीइत्तए, मासियं णं भिक्खुपडिमं जाव पायंसि थाणू वा कंटए वा हीरए वा सक्करा वा अणुपविसेज्जा नो कप्पइ से नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा कप्पइ से आहारियं रीइत्तए, मासियं णं जाव अच्छिंसि वा० पाणाणि वा बीयाणि वा रए वा परियावज्जिज्जा नो से कप्पइ नीहरित्तए वा विसो-हित्तए वा, कप्पइ से आहारीयं रीइत्तए, मासियं णं० जत्थेव सूरिए अत्थमेज्ज तत्थेव जलंसि वा थलंसि वा दुग्गंसि वा निण्णंसि वा पव्वयंसि वा विसमंसि वा गड्डाए वा दरीए वा कप्पइ से तं रयणिं तत्थेव उवायणावित्तए, नो से कप्पइ पदमवि गमित्तए, कप्पइ से कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाईणाभिमुहस्स वा दाहिणाभिमुहस्स वा पडीणाभि-मुहस्स वा उत्तराभिमुहस्स वा आहारीयं रीइत्तए, मासियं णं० नो कप्पइ अणंतरहियाए पुढवीए निहाइत्तए वा पयलाइत्तए वा, केवली बूया-आदाणमेयं, से तत्थ निहायमाणे वा पयलायमाणे वा हत्थेहिं भूमिं परामुसेज्जा अहाविधिमेव ठाणं ठाइत्तए निक्खमित्तए वा, उच्चारपासवणेणं उब्बाहिज्जेजा नो से कप्पइ ओगिण्हित्तए, कप्पइ से पुव्वपडिलेहितए थंडिले उच्चारपासवणं परिट्ठवित्तए, तमेव उवस्सयं आगम्म अहाविधिं ठाणं ठाइत्तए, मासियं० नो कप्पइ ससरक्खेहिं पाएहिं (काएहिं प्र०) गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा नि० पवि०, अह पुण एवं जाणेज्जा-स सरक्खे सेअत्ताए वा जल्लत्ताए वा मलत्ताए वा पंकत्ताए वा विद्धत्थे(परिणए)से कप्पइ गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्ख० पवि०, मासियं० नो कप्पइ सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा पायाणि वा दंताणि वा अच्छीणि वा मुहं वा उच्छोलित्तए वा पधोवित्तए वा णण्णत्थ लेवालेवेण वा, मासियं णं० नो कप्पइ आसस्स वा हत्थिस्स वा गोणस्स वा महिसस्स वा कोलस्स वा साणस्स वा (कोलसुणगस्स वा) दुट्ठस्स वा वग्घस्स वा० आवडमाणस्स पदमवि पच्चोसक्कित्तए, अदुट्ठस्स आवडमाणस्स कप्पति जुगमित्तं पच्चोसक्कित्तए, मासियं णं ०नो कप्पइ छायाओ सीयंति उण्हं इत्तए उण्हाओ उण्हंति नो छायं एत्तए, जं जत्थ जया सिया तं तत्थ अहियासए, एवं खलु एसा मासिया भिक्खुपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासित्ता पालित्ता सोहित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आराहित्ता आणाए अणुपालित्ता भवति। ३२। दोमासियं णं भिक्खुपडिमं० निच्चं वोसट्ठकाए तं चेव जाव दो दत्ती, तिमासियं० तिण्णि दत्तीओ चाउमासियं० चत्तारि दत्तीओ पंचमासियं पंच दत्तीओ छमासियं छ दत्तीओ सत्तमासियं सत्त दत्तीओ, जत्थ जत्तिया मासा तत्थ तत्तिया दत्तीओ। ३३। पढमं सत्तराइंदियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स निच्चं वोसिट्ठकाए जाव अहियासेइ, कप्पइ से चउत्थेणं

९८५, दशाश्रुतस्कंधच्छेदसूत्रं, दशा-७

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [३४]

दीप अनुक्रम [५१]

भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए वा उत्ताणगस्स वा पासेल्लगस्स वा नेसज्जियस्स वा ठाणं ठाएत्तए, तत्थ दिव्वमाणुसतिरिक्खजोणिया उवसग्गा समुप्पज्जिज्जा, ते णं उवसग्गा० पयलिज्ज वा पवडिज्ज वा नो से कप्पइ पयलित्तए वा पवडित्तए वा, तत्थ से उच्चारपासवणं उब्बाधेज्जा नो से कप्पइ उच्चारपासवणं ओगिण्हेत्तए, कप्पइ से पुव्वपडिलेहियंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं परिट्ठवित्तए, अहाविधिमेव ठाणं ठाइत्तए, एसा खलु पढमा सत्तराइंदिया भिक्खुपडिमा अहासुत्तं जाव आणाए अणुपालिता भवति, एवं दोच्चा सत्तराइंदियावि, नवरं दंडातियस्स वा लगंडसाइस्स वा उक्कुडुयस्स वा ठाणं ठाइत्तए, सेसं तं चेव जाव अणुपालिता भवति, एवं तच्चा सत्तराईदियावि भवति, नवरं गोदुहियाए वा वीरासणियस्स वा अंबखुज्जस्स वा ठाणं ठाइत्तए, एवं चेव जाव अणुपालिता भवति। ३४। एवं अहोरातियावि, नवरं छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणियस्स वा ईसिं दोवि पाए साहट्टु वग्घारियपाणिस्स ठाणं ठाइत्तए, सेसं तं चेव जाव अणुपालिता भवति, एगराइं णं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्चं वोसिट्ठकाए जाव अहियासेति, कप्पइ से अट्ठमेण भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए वा ईसिपब्भारगएणं काएणं एगपोग्गलट्ठिताए दिट्ठीए अणिमिसनयणे अहापणिहितेहिं गत्तेहिं सव्विंदिएहिं गुत्ते दोवि पाए साहट्टु वग्घारियपाणिस्स ठाणं ठाइत्तए, तत्थ से दिव्वमाणुसतिरिच्छजोणिया जाव अहाविधिमेव ठाणं ठाइत्तए, एगराइं णं भिक्खुपडिमं अणणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति, तं०-उम्मायं वा लभेज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं पाउणेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ वा भंसेज्जा, एगराइयं णं भिक्खुपडिमं सम्मं अणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा हियाए जाव आणुगामियत्ताए भवंति, तं०-ओहिणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा मणपज्जवनाणे वा से समुप्पज्जेज्जा केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा, एवं खलु एसा एगराइया भिक्खुपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासिता पालिता सोहिता तीरिता किट्टिता आराहिता आणाए अणुपालिता यावि भवति, एताओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं बारस भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओत्ति बेमि। ३५॥ भिक्षुप्रतिमाध्ययनं ७॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे होत्था तं०-हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते, हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए, हत्थुत्तराहिं जाए, हत्थुत्तराहिं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पवइए, हत्थुत्तराहिं अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने, साइणा परिनिव्वुए भयवं, जाव भुज्जो २ उवदंसेइत्ति बेमि। ३६॥ पर्युषणाकल्पाध्ययनं ८॥ तेणं कालेणं० चंपा नामं नगरी होत्था वण्णओ, पुण्णभद्दे चेइए, कोणिए राया, धारिणी देवी, सामी समोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे बहवे निग्गंथा य निग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वदासी-एवं खलु अज्जो! तीसं मोहणीयट्ठाणाइं इमाइं इत्थी वा पुरिसो वा अभिक्खणं २ आयरमाणे वा समायरमाणे वा मोहणिज्जत्ताए कम्मं पकरेति, तं०-'जे केवि तसे पाणे, वारिमज्झे विगाहिया। उदएणऽक्कम्म मारेति, महामोहं पकुव्वइ॥ १८॥ सीसावेढेण जे केई, आवेढेइ अभिक्खणं। तिव्वासुभसमायारे, महामोहं० ॥ १९॥ पाणिणा संपिहित्ताणं, सोयमावरि पाणिणं। अंतो नदंतं मारेइ० ॥ २०॥ जायतेयं समारब्भ, बहु ओरुंभिया जणं। अंतो धूमेण मारेइ० ॥ २१॥ सीसंमि जे पहणंति, उत्तमंगंमि चेयसा। विभज्ज मत्थयं फाले० ॥ २२॥ पुणो २ पणिधीए, हणित्ता (वाले) उवहसे जणं। फलेण अदुवा दंडेणं० ॥ २३॥ गूढायारी निगूहिज्जा, मायं मायाए छायए। असच्चवाई निण्हाइ० ॥ २४॥ धंसेइ जो अभूएणं, अकम्मं अत्तकम्मुणा। अदुवा तुममकासित्ति० ॥ २५॥ जाणमाणो पुरिसओ, सच्चमोसाइ भासति। अक्खीणझंझे पुरिसे० ॥ २६॥ अणायगस्स नयवं, दारं तस्सेव धंसिया। विउलं विक्खोभइत्ताणं, किच्चाणं पडिवाहिरं ॥ २७॥ उवगसंतंपि झंपित्ता, पडिलोमाहिं वग्गुहिं। भोगभोगे वियारेति० ॥ २८॥ अकुमारभूए जे केइ, कुमारभूएत्तिऽहं वए। इत्थीविसयगेहीए० ॥ २९॥ अबंभयारी जे केई, बंभयारीतिऽहं वए। गद्दभेव गवं मज्झे, विस्सरं नदती नदं ॥ ३० ॥ अप्पणो अहिए बाले, मायामोसं बहुं भसे। इत्थीविसयगिद्धीए० ॥ ३१ ॥ जंनिस्सिए उवहती, जससाऽभिगमेण य। तस्स लुब्भइ वित्तंमि० ॥ ३२॥ ईसरेण अदुवा गामेणं, अणीसरे ईसरीकए। तस्स संपरिगहित(यहीण)स्स, सिरी अतुलमागया॥३३॥ ईसादोसेण आइट्ठे, कलुसाउलचेयसे। जे अंतरायं चेएइ० ॥३४॥ सप्पी जहा अंडपुडं, भत्तारं जो विहिंसइ। सेणावतिं पसत्थारं० ॥ ३५॥ जे नायगं च रट्ठस्स, नेयारं निगमस्स वा। सेट्ठिं बहुरवं हंता० ॥ ३६॥ बहुजणस्स नेतारं, दीवं ताणं च पाणिणं। एयारिसं नरं हंता० ॥ ३७॥ उवट्ठियं पडिविरयं, संजयं सुसमाहियं। विउक्कम्म धम्माओ भंसेति० ॥ ३८॥ तहेवाणंतनाणीणं, जिणाणं वरदंसिणं। तेसिं अवण्णवं बाले० ॥ ३९॥ णेयाउयस्स मग्गस्स, दुट्ठे अवहर-(रज्झ)ती बहुं। तं तिप्पयंतो भावेति० ॥ ४०॥ आयरियउवज्झाया, सुयं विणयं च गाहिए। ते चेव खिंसती बाले० ॥ ४१॥ आयरिउवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पई। अपरिपूयए थद्धे० ॥ ४२॥ अबहुस्सुएवि (य) जे केई, सुएणं पविकत्थई। सज्झायवादं वदति० ॥ ४३॥ अतवस्सी य जे केई, तवेणं पविकत्थई। सव्वलोगपरे तेणे० । ४४॥ साहारणट्ठा जे केई, गिलाणंमि

९८६ दशाश्रुतस्कंधच्छेदसूत्रं, दशा - 8

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र दशा- ९ आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [४५] + गाथा: ||१८--५६|| दीप अनुक्रम [५४-९३]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] "दशाश्रुतस्कन्ध" मूलं

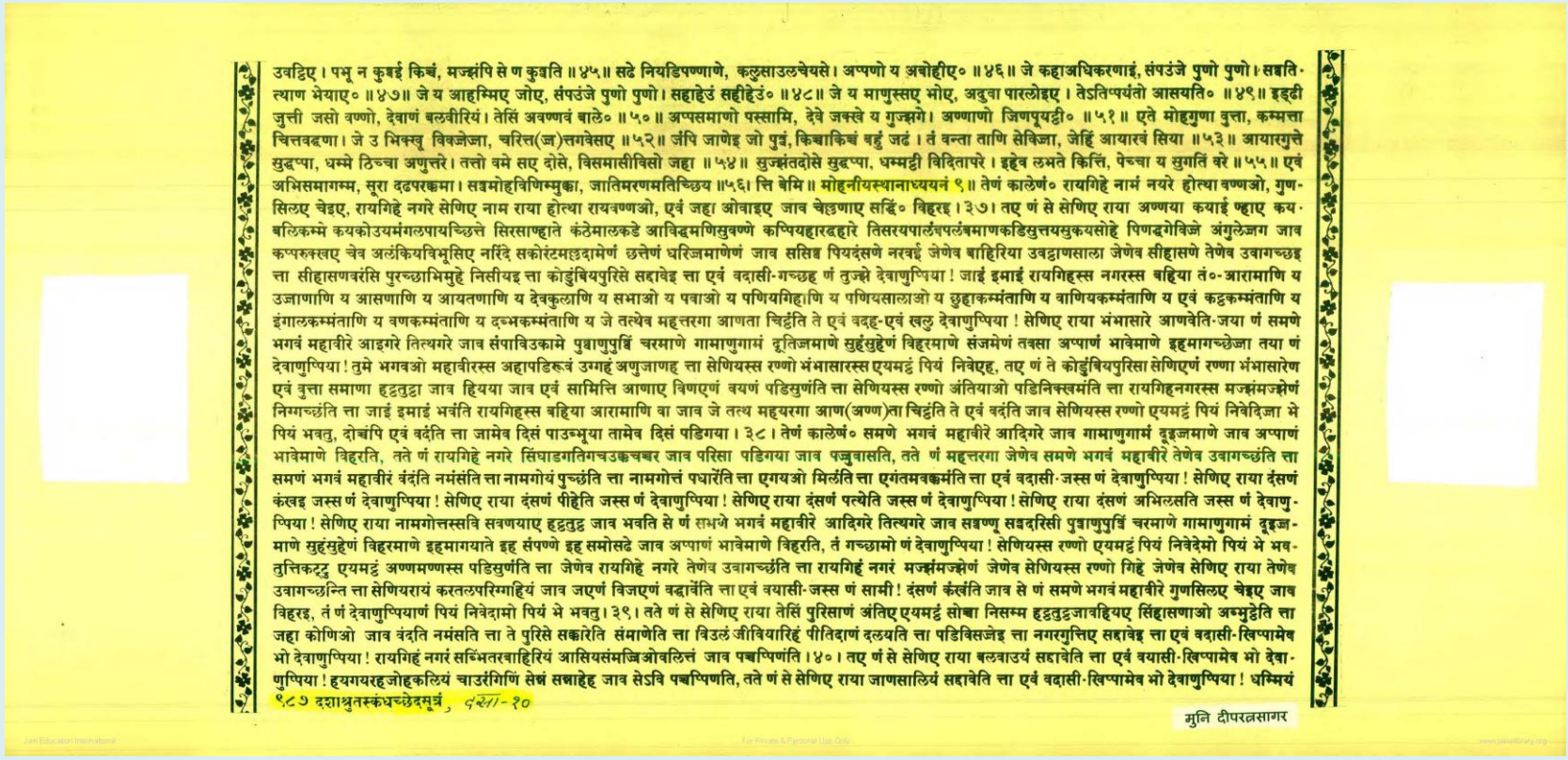

उवट्ठिए। पभू न कुवई किचं, मज्झंपि से ण कुवति ॥४५॥ सढे नियडिपण्णाणे, कलुसाउलचेयसे। अप्पणो य अबोहीए० ॥४६॥ जे कहाअधिकरणाइं, संपउंजे पुणो पुणो। सबति-त्थाण भेयाए० ॥४७॥ जे य आहम्मिए जोए, संपउंजे पुणो पुणो। सहाहेउं सहीहेउं० ॥४८॥ जे य माणुस्सए भोए, अदुवा पारलोइए। तेऽतिप्पयंतो आसयति० ॥४९॥ इड्ढी जुत्ती जसो वण्णो, देवाणं बलवीरियं। तेसिं अवण्णवं बाले० ॥५०॥ अप्पसमाणो पस्सामि, देवे जक्खे य गुज्झगे। अण्णाणो जिणपूयट्ठी० ॥५१॥ एते मोहगुणा वुत्ता, कम्मत्ता चित्तवद्धणा। जे उ भिक्खू विवज्जेजा, चरित्त(ज)त्तगवेसए ॥५२॥ जंपि जाणेइ जो पुवं, किचाकिचं बहुं जढं। तं वन्ता ताणि सेविजा, जेहिं आयारवं सिया ॥५३॥ आयारगुत्ते सुद्धप्पा, धम्मे ठिच्चा अणुत्तरे। तत्तो वमे सए दोसे, विसमासीविसो जहा ॥५४॥ सुज्झंतदोसे सुद्धप्पा, धम्मट्ठी विदितापरे। इहेव लभते कित्तिं, पेच्चा य सुगतिं वरे ॥५५॥ एवं अभिसमागम्म, सूरा दढपरक्कमा। सबमोहविणिम्मुक्का, जातिमरणमतिच्छिय ॥५६॥ त्ति बेमि ॥ मोहनीयस्थानाध्ययनं ९॥ तेणं कालेणं० रायगिहे नामं नयरे होत्था वण्णओ, गुण-सिलए चेइए, रायगिहे नगरे सेणिए नाम राया होत्था रायवण्णओ, एवं जहा ओवाइए जाव चेल्लणाए सद्धिं० विहरइ। ३७। तए णं से सेणिए राया अण्णया कयाई ण्हाए कय-बलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सिरसाण्हाते कंठेमालकडे आविद्धमणिसुवण्णे कप्पियहारद्धहारे तिसरयपालंबपलंबमाणकडिसुत्तयसुकयसोहे पिणद्धगेविज्जे अंगुलेज्जग जाव कप्पकक्खए चेव अलंकियविभूसिए नरिंदे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिजमाणेणं जाव ससिव्व पियदंसणे नरवई जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ त्ता सीहासणवरंसि पुरच्छाभिमुहे निसीयइ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ त्ता एवं वदासी-गच्छह णं तुज्झे देवाणुप्पिया! जाई इमाई रायगिहस्स नगरस्स बहिया तं०-आरामाणि य उज्जाणाणि य आसणाणि य आयतणाणि य देवकुलाणि य सभाओ य पवाओ य पणियगिहाणि य पणियसालाओ य छुहाकम्मंताणि य वाणियकम्मंताणि य एवं कट्ठकम्मंताणि य इंगालकम्मंताणि य वणकम्मंताणि य दब्भकम्मंताणि य जे तत्थेव महत्तरगा आणता चिट्ठंति ते एवं वदह-एवं खलु देवाणुप्पिया! सेणिए राया भंभासारे आणवेति-जया णं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे जाव संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूतिजमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे इहमागच्छेज्जा तया णं देवाणुप्पिया! तुमे भगवओ महावीरस्स अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणह त्ता सेणियस्स रण्णो भंभासारस्स एयमट्ठं पियं निवेएह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा भंभासारेण एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव हियया जाव एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति त्ता सेणियस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति त्ता रायगिहनगरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति त्ता जाई इमाइं भवंति रायगिहस्स बहिया आरामाणि वा जाव जे तत्थ महयरगा आण(अण्ण)त्ता चिट्ठंति ते एवं वदंति जाव सेणियस्स रण्णो एयमट्ठं पियं निवेदिजा मे पियं भवतु, दोचंपि एवं वदंति त्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया। ३८। तेणं कालेणं० समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव गामाणुगामं दूइजमाणे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं रायगिहे नगरे सिंघाडगतिगचउक्कचच्चर जाव परिसा पडिगया जाव पज्जुवासति, तते णं महत्तरगा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति त्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति त्ता नामगोयं पुच्छंति त्ता नामगोत्तं पधारेंति त्ता एगयओ मिलंति त्ता एगंतमवक्कमंति त्ता एवं वदासी-जस्स णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया दंसणं कंखइ जस्स णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया दंसणं पीहेति जस्स णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया दंसणं पत्थेति जस्स णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया दंसणं अभिलसति जस्स णं देवाणु-प्पिया! सेणिए राया नामगोत्तस्सवि सवणयाए हट्ठतुट्ठ जाव भवति से णं समणे भगवं महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव सबण्णू सबदरिसी पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज-माणे सुहंसुहेणं विहरमाणे इहमागयाते इह संपण्णे इह समोसढे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! सेणियस्स रण्णो एयमट्ठं पियं निवेदेमो पियं भे भव-तुत्तिकट्टु एयमट्ठं अण्णमण्णस्स पडिसुणंति त्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छंति त्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सेणियस्स रण्णो गिहे जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छन्ति त्ता सेणियरायं करतलपरिग्गहियं जाव जएणं विजएणं वद्धावेंति त्ता एवं वयासी-जस्स णं सामी! दंसणं कंखंति जाव से णं समणे भगवं महावीरे गुणसिलए चेइए जाव विहरइ, तं णं देवाणुप्पियाणं पियं निवेदामो पियं भे भवतु। ३९। तते णं से सेणिए राया तेसिं पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठजावहियए सिंहासणाओ अब्भुट्ठेति त्ता जहा कोणिओ जाव वंदति नमंसति त्ता ते पुरिसे सक्कारेति संमाणेति त्ता विउलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति त्ता पडिविसज्जेइ त्ता नगरगुत्तिए सद्दावेइ त्ता एवं वदासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! रायगिहं नगरं सब्भितरबाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति ।४०। तए णं से सेणिए राया बलवाउयं सद्दावेति त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवा-णुप्पिया! हयगयरहजोहकलियं चाउरंगिणिं सेन्नं सन्नाहेह जाव सेऽवि पच्चप्पिणति, तते णं से सेणिए राया जाणसालियं सद्दावेति त्ता एवं वदासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! धम्मियं

९८७ दशाश्रुतस्कंधच्छेदसूत्रं, दशा-१०

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र दशा- १० आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [४१]

दीप अनुक्रम [९८]

जाणपवरं जुत्तामेव उवट्ठावेह त्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तते णं से जाणसालिए सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठजावहियये जेणेव जाणसाला तेणेव उवागच्छइ त्ता जाणसालं अणुपविसइ त्ता जाणं पच्चवेक्खइ त्ता पच्चोरुभति त्ता जाणगं संपमज्जइ त्ता जाणगं णीणेति त्ता जाणगं संवट्टइ त्ता दूसं पवीणेति त्ता जाणाइं समलंकरेइ त्ता जाणाइं वर-भंडमंडियाइं करेइ त्ता जेणेव वाहणसाला तेणेव उवागच्छइ त्ता वाहणसालं अणुपविसति त्ता वाहणाइं पच्चुविक्खति त्ता वाहणाइं संपमज्जइ त्ता वाहणाइं अप्फालइ त्ता वाहणाइं णीणेति त्ता दूसे पविणेति त्ता वाहणाइं अलंकारेति त्ता वाहणाइं वराभरणमंडियाइं करेति त्ता जाणगं जोएति त्ता वट्टिमोगाहेति त्ता पओगलट्ठिं पओगधरए य समं आरोहइ त्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ त्ता करयल जाव एवं वदासी-जुत्ते ते सामी! धम्मिए जाणपवरे, आइट्ठा भदंत! वग्गुगाही।४१। तए णं सेणिए राया भंभासारे जाणसालियस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव मज्जणघरं अणुपविसइ जाव कप्परुक्खए चेव अलंकियविभूसिए नरिंदे जाव मज्जणघराओ पडिनिक्खमति त्ता जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ त्ता चिल्लणं देवीं एवं वदासी-एवं खलु देवाणुप्पिए! समणे भगवं महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तं महाफलं खलु देवाणुप्पिए! तहारूवाणं अरहंताणं जाव तं गच्छामो देवाणुप्पिए! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो सक्कारेमो संमाणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेमो एतं णं इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति।४२। तते णं सा चिल्लणा देवी सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव पडि-सुणेति त्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ त्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता, किं ते ?, वरपायपत्तनेउरमणिमेहलाहाररइयउविहियकडगक्खडुएगावलिकंठ-सुरजतिसरयतवरवलयहेमसुत्तयकुंडलुज्जोवियाणणा रयणभूसियंगी चीणंसुयवत्थपवरपरिहिया दुगुल्लसुकुमालकंतरमणिज्जउत्तरिज्जा सव्वोउयसुरभिकुसुमसुंदरइयपलंबसोहंतकंतविक-संतचित्तमाला वरचंदणचच्चिया वराभरणभूसियंगी कालागुरुधूवधूविया सिरीसमाणवेसा बहूहिं खुज्जाहिं चिलातियाहिं जाव महत्तरगावंदपरिक्खित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ।४३। तए णं से सेणिए राया चिल्लणाए देवीए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहति सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिजमाणेणं उववाइयगमेणं जाव पज्जुवासइ, एवं चेल्लणावि जाव महत्तरगावंदपरिक्खित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति त्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति त्ता सेणियं रायं पुरओ काउं ठितिया चेव पज्जुवासति, तते णं समणे भगवं महावीरे सेणियस्स रण्णो भंभासारस्स चिल्लणाए य देवीए तीसे महतिमहालियाए परिसाए जइपरिसाए इसि० मुणि० देव० मणुस्स० देवी० अणेगसयाए जाव धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, सेणिओ राया पडिगओ।४४। तत्थेगतियाणं निग्गंथाण य निग्गंथीण य सेणियं रायं चिल्लणं देवीं पासित्ताणं इमेयारूवे अज्झ-त्थिए जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था-अहो णं सेणिए राया महड्ढिए जाव महासोक्खे जे णं ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिते चिल्लणाए देवीए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति, न मे दिट्ठे देवे देवलोगंमि, सक्खं खलु अयं देवे, जइ इमस्स तवनियमबंभचेरवासस्स फलवित्तिविसेसे अत्थि तया वयमवि आगमेस्साए इमाइं उरालाइं एयारूवाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरामो सेतं साहु, अहो णं चिल्लणा देवी महिड्ढिया जाव महासोक्खा जा णं ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वालंकारवि-भूसिया सेणिएणं रन्ना सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ, ण मे दिट्ठाओ देवीओ देवलोए, सक्खं खलु इयं देवी, जइ इमस्स सुचरियस्स तवनियमबंभचेरवा-सस्स कल्लाणफलवित्तिविसेसे अत्थि वयमवि आगमिस्साणं इमाइं एयारूवाइं उरालाइं जाव विहरामो, सेतं साहुणी ।४५। अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे बहवे निग्गंथा य निग्गं-थीओ य आमंतित्ता एवं वयासी-सेणियं रायं चिल्लणं देवीं च पासित्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-अहो णं सेणिए राया महिड्ढिए जाव से तं साहू, अहो णं चिल्लणा देवी महड्ढिया सुंदरा जाव से तं साहुणी, से णूणं अज्जो ! अत्थे समट्ठे ?, हंता अत्थि, एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे पडिपुण्णे केवलिए संसुद्धे णेआउए सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे अवितहमविसंधिं सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वाइंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति, जस्स णं धम्मस्स निग्गंथे सिक्खाए उवट्ठिए विहरमाणे पुरा दिगिंछाए पुरा पिवासाए पुरा वातातवेहिं पुट्ठेहिं विरूवरूवेहिं परिसहोवसग्गेहिं उदिण्णकामजाए यावि विहरेज्जा, से य परक्कमेज्जा से य परक्कमाणे पासेज्जा जे इमे उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया तेसिं णं अण्णतरस्स अतिजायमाणस्स वा निज्जाय-माणस्स वा पुरओ महं दासीदासकिंकरकम्मकरपुरिसपदायपरिक्खित्तं छत्तभिंगारं गहाय निग्गच्छंति तदणंतरं च णं पुरओ महाआसा आसवरा उभओ तेसिं नागा नागवरा पिट्ठओ रथा रथवरा रथसंगिल्ली सेन्नं उद्धरियसेयच्छत्ते अब्भुग्गयभिंगारे पगहियतालविंटे पवियण्णसेयचामरवालवीयणीए अभिक्खणं २ अतिजाति य निज्जाति य सप्पभा, सपुव्वावरं च णं ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सव्वालंकारविभूसिए महतिमहालियाए कूडागारसालाए महतिमहालयंसि सिंहासणंसि जाव सन्नातिएणं जोइणा झियायमाणेणं इत्थिगुम्मपरिवुडे (२४७)

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [४६]

दीप अनुक्रम [१०३]

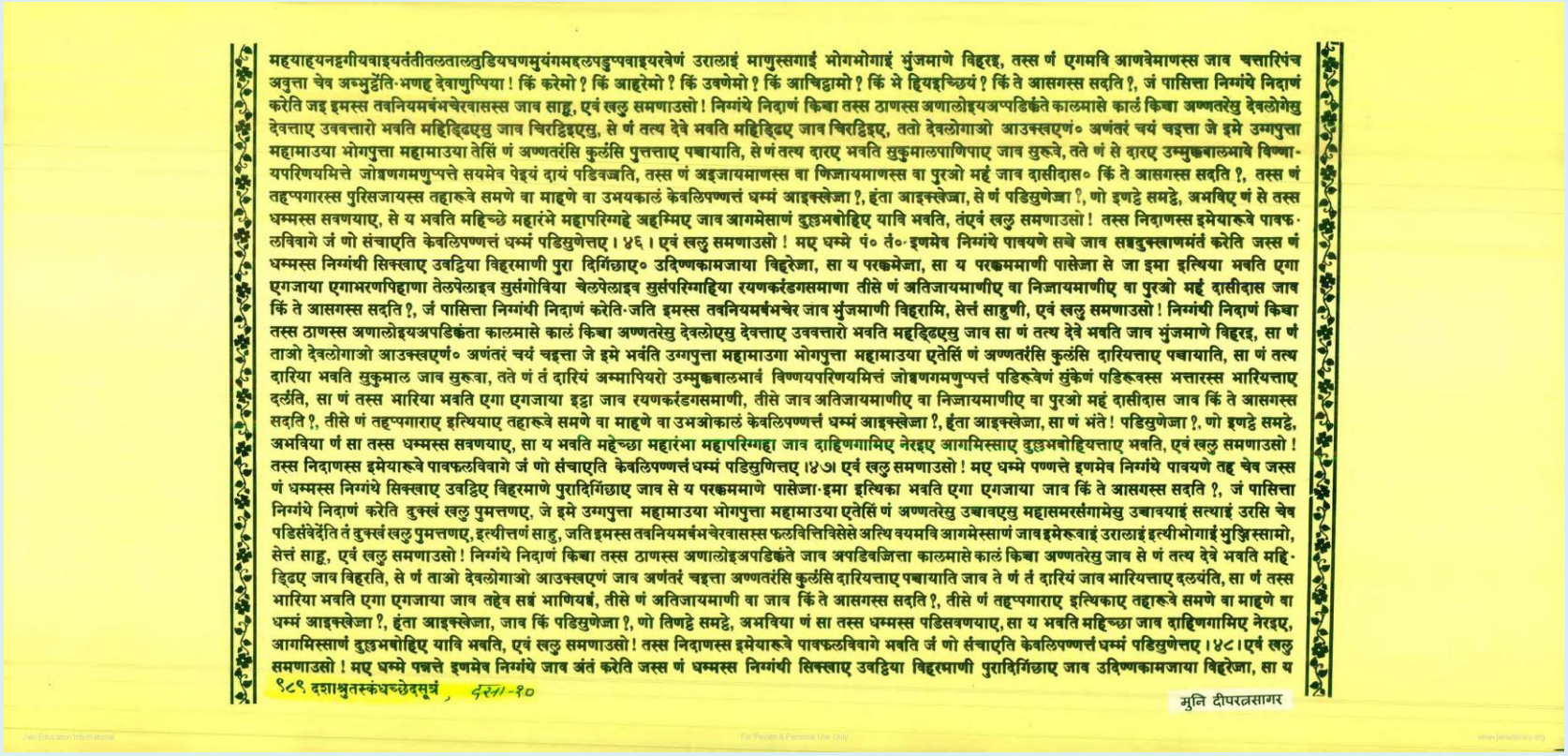

महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुयंगमद्दलपडुप्पवाइयरवेणं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, तस्स णं एगमवि आणवेमाणस्स जाव चत्तारिपंच अवुत्ता चेव अब्भुट्ठेंति-भणह देवाणुप्पिया ! किं करेमो ? किं आहरेमो ? किं उवणेमो ? किं आचिट्ठामो ? किं मे हियइच्छियं ? किं ते आसगस्स सदति ?, जं पासित्ता निग्गंथे निदाणं करेति जइ इमस्स तवनियमबंभचेरवासस्स जाव साहू, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथे निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयअप्पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति महिड्ढिएसु जाव चिरट्ठिइएसु, से णं तत्थ देवे भवति महिड्ढिए जाव चिरट्ठिइए, ततो देवलोगाओ आउक्खएणं० अणंतरं चयं चइत्ता जे इमे उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया तेसिं णं अण्णतरंसि कुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाति, से णं तत्थ दारए भवति सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे, तते णं से दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णा-यपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सयमेव पेइयं दायं पडिवज्जति, तस्स णं अइजायमाणस्स वा णिज्जायमाणस्स वा पुरओ महं जाव दासीदास० किं ते आसगस्स सदति ?, तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स तहारूवे समणे वा माहणे वा उभयकालं केवलिपण्णत्तं धम्मं आइक्खेज्जा ?, हंता आइक्खेज्जा, से णं पडिसुणेज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, अभविए णं से तस्स धम्मस्स सवणयाए, से य भवति महिच्छे महारंभे महापरिग्गहे अहम्मिए जाव आगमेसाणं दुल्लभबोहिए यावि भवति, तंएवं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफ-लविवागे जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं पडिसुणेत्तए । ४६ । एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पं० तं०-इणमेव निग्गंथे पावयणे सच्चे जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति जस्स णं धम्मस्स निग्गंथी सिक्खाए उवट्ठिया विहरमाणी पुरा दिगिंछाए० उदिण्णकामजाया विहरेज्जा, सा य परक्कमेज्जा, सा य परक्कममाणी पासेज्जा से जा इमा इत्थिया भवति एगा एगजाया एगाभरणपिहाणा तेलपेलाइव सुसंगोविया चेलपेलाइव सुसंपरिग्गहिया रयणकरंडगसमाणा तीसे णं अतिजायमाणीए वा निजायमाणीए वा पुरओ महं दासीदास जाव किं ते आसगस्स सदति ?, जं पासित्ता निग्गंथी निदाणं करेति-जति इमस्स तवनियमबंभचेर जाव भुंजमाणी विहरामि, सेत्तं साहुणी, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथी निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति महिड्ढिएसु जाव सा णं तत्थ देवे भवति जाव भुंजमाणे विहरइ, सा णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं० अणंतरं चयं चइत्ता जे इमे भवंति उग्गपुत्ता महामाउगा भोगपुत्ता महामाउया एतेसिं णं अण्णतरंसि कुलंसि दारियत्ताए पच्चायाति, सा णं तत्थ दारिया भवति सुकुमाल जाव सुरूवा, तते णं तं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं विण्णयपरिणयमित्तं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिरूवेणं सुंकेणं पडिरूवस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दलंति, सा णं तस्स भारिया भवति एगा एगजाया इट्ठा जाव रयणकरंडगसमाणी, तीसे जाव अतिजायमाणीए वा निजायमाणीए वा पुरओ महं दासीदास जाव किं ते आसगस्स सदति ?, तीसे णं तहप्पगाराए इत्थियाए तहारूवे समणे वा माहणे वा उभओकालं केवलिपण्णत्तं धम्मं आइक्खेज्जा ?, हंता आइक्खेज्जा, सा णं भंते ! पडिसुणेज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, अभविया णं सा तस्स धम्मस्स सवणयाए, सा य भवति महेच्छा महारंभा महापरिग्गहा जाव दाहिणगामिए नेरइए आगमिस्साए दुल्लभबोहियत्ताए भवति, एवं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं पडिसुणित्तए ।४७। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे तह चेव जस्स णं धम्मस्स निग्गंथे सिक्खाए उवट्ठिए विहरमाणे पुरादिगिंछाए जाव से य परक्कममाणे पासेज्जा-इमा इत्थिका भवति एगा एगजाया जाव किं ते आसगस्स सदति ?, जं पासित्ता निग्गंथे निदाणं करेति दुक्खं खलु पुमत्तणए, जे इमे उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया एतेसिं णं अण्णतरेसु उच्चावएसु महासमरसंगामेसु उच्चावयाइं सत्थाइं उरसि चेव पडिसंवेदेंति तं दुक्खं खलु पुमत्तणए, इत्थीत्तणं साहु, जति इमस्स तवनियमबंभचेरवासस्स फलवित्तिविसेसे अत्थि वयमवि आगमेस्साणं जाव इमेरूवाइं उरालाइं इत्थीभोगाइं भुञ्जिस्सामो, सेत्तं साहू, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथे निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइअपडिक्कंते जाव अपडिवज्जित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु जाव से णं तत्थ देवे भवति महि-ड्ढिए जाव विहरति, से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव अणंतरं चइत्ता अण्णतरंसि कुलंसि दारियत्ताए पच्चायाति जाव ते णं तं दारियं जाव भारियत्ताए दलयंति, सा णं तस्स भारिया भवति एगा एगजाया जाव तहेव सव्वं भाणियव्वं, तीसे णं अतिजायमाणी वा जाव किं ते आसगस्स सदति ?, तीसे णं तहप्पगाराए इत्थिकाए तहारूवे समणे वा माहणे वा धम्मं आइक्खेज्जा ?, हंता आइक्खेज्जा, जाव किं पडिसुणेज्जा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, अभविया णं सा तस्स धम्मस्स पडिसवणयाए, सा य भवति महिच्छा जाव दाहिणगामिए नेरइए, आगमिस्साणं दुल्लभबोहिए यावि भवति, एवं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे भवति जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं पडिसुणेत्तए ।४८। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पन्नत्ते इणमेव निग्गंथे जाव अंतं करेति जस्स णं धम्मस्स निग्गंथी सिक्खाए उवट्ठिया विहरमाणी पुरादिगिंछाए जाव उदिण्णकामजाया विहरेज्जा, सा य

९८९ दशाश्रुतस्कंधच्छेदसूत्रं, दशा-१०

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [४९]

दीप अनुक्रम [१०६]

परक्कममाणी पासेज्जा से जे इमे भवंति उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया जाव किं ते आसगस्स सदति ?, जं पासित्ताणं निग्गंथी नियाणं करेति-दुक्खं खलु इत्थित्तणए, दुस्संचाराइं वामंतराइं जाव सन्निवेसंतराइं, से जहानामए अंबपेसियाति वा अंबाडपेसीयाति वा मातुलुंगपेसियाति वा मंसपेसियाति वा उच्छुखंडियाति वा संबलिफालियाति वा बहुजणस्स आसासणिज्जा पत्थणिज्जा विं(पी)हणिज्जा अभिलसणिज्जा एवामेव इत्थिकावि बहुजणस्स आसासणिज्जा जाव अभिलसणिज्जा, तं दुक्खं खलु इत्थित्तणए, पुमत्तणए साहु, जइ इमस्स तवनियम जाव अत्थि अहमवि आगमिस्साणं इमाइं एयारूवाइं पुरिसभोगभोगाइं भुंजिस्सामि, से तं साहुणी, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथी निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता जाव अपडिवज्जित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, से णं तत्थ देवे भवति महिड्ढिए जाव चइत्ता तहेव दारए भवति जाव किं ते आसगस्स सदति ?, तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स जाव अभविए णं से तस्स धम्मस्स सवणयाए, से य भवति महिच्छे जाव दाहिणगामिए नेरइए जाव दुल्लहबोहिए यावि भवति, एवं खलु जाव पडिसुणित्तए । ४९ । एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे जाव तहेव, जस्स णं धम्मस्स निग्गंथे वा निग्गंथी वा सिक्खाए उवट्ठिए विहरमाणे पुरादिगिंछाए जाव उदिण्णकामभोगे विहरिज्जा, से य परक्कममाणे माणुसेहिं कामभोगेहिं निव्वेयं गच्छेज्जा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा अणितिया असासया सडणपडणविद्धंसणधम्मा उच्चारपासवणखेलसिंघाणवंतपित्तसुक्कसोणियसमुब्भवा दुरूवउस्सासनिस्सासा दुरूवमुत्तपुरिसपुण्णा वंतासवा पित्तासवा खेलासवा पच्छा पुरं च णं अवस्सं विप्पजहणिज्जा, संति उड्ढं देवा देवलोए ते णं तत्थ अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेंति अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्वित्ता परियारेंति अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेंति, जति इमस्स तवनियम जाव तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव वयमवि आगमेसाणं इमाइं एयारूवाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरामो, सेत्तं साहू, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथे वा निग्गंथी वा निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति तं०-महिड्ढिएसु जाव पभासमाणे, से णं देवे अण्णं देवं अण्णं देवीं तं चेव जाव परियारेंति, से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं तं चेव जाव पुमत्ताए पच्चायाति जाव किं ते आसगस्स सदति ?, तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स तहारूवे समणे वा माहणे वा जाव पडिसुणेज्जा ?, हंता पडिसुणेज्जा, से णं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोइज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, अभविये णं से तस्स धम्मस्स सद्दहणताए०, से भवति महिच्छे जाव दाहिणगामिए नेरइए आगमेस्साए दुल्लभबोहिए यावि भवति, एवं खलु समणाउसो ! तस्स णियाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं सद्दहेत्तए वा पत्तिइत्तए वा रोइत्तए वा । ५० । एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते तं चेव से य परक्कममाणे माणुस्सएसु कामभोगेसु निव्वेयं गच्छेज्जा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा अणितिया तहेव जाव संति उड्ढं देवा देवलोगंसि ते णं तत्थ णो अण्णं देवं णो य अण्णाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेंति अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्वित्ता परियारेंति ता जइ इमस्स तवनियम तं चेव सव्वं जाव से णं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, अण्णत्थरुई रुहमायाए से भवति, से जे इमे आरण्णिया आवसहिया गामणियंतिया कण्हुरहस्सिया णो बहुसंजया णो बहुपडिविरया सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु अप्पणा सच्चामोसाइं पउंजंता अहं ण हंतव्वो अण्णे हंतव्वा अहं न अज्जावेयव्वो अण्णे अज्जावेयव्वा अहं न परियावेयव्वो अण्णे परियावेयव्वा अहं न परिघेत्तव्वो अण्णे परिघेत्तव्वा अहं न उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा, एवामेव इत्थिकामेहिं मुच्छिया गढिया गिद्धा अज्झोववण्णा जाव कालमासे कालं किच्चा अण्णतराइं आसुराइं किब्बिसियाइं ठाणाइं उववत्तारो भवंति, ततो मुच्चमाणा भुजो २ एलमूलयत्ताए पच्चायंति, तं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स जाव णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं सद्दहित्तए वा० ।५१। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते जाव माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा तहेव संति उड्ढं देवा देवलोयंसि अण्णं देवं अण्णं च देवीं अभिजुंजिय २ परियारेंति णो अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेंति, जति इमस्स तवनियम तं चेव जाव एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथो वा निग्गंथी वा निदाणं किच्चा अणालोइयअप्पडिक्कंते जाव विहरति, से णं तत्थ अण्णे देवे अण्णाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेति, णो अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेति, से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं तहेव वत्तव्वं णवरं हंता सद्दहिज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा, से णं सीलव्वयगुणव्वयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं पडिवज्जेज्जा ?, नो इणट्ठे समट्ठे, से णं दंसणसावए भवति अभिगयजीवाजीवे जाव अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते जाव एस अट्ठे० सेसे अणट्ठे, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ त्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तंएवं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएइ सीलव्वयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं पडिवज्जित्तए ।५२। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पं० तं चेव सव्वं जाव से य परक्कममाणे देवमाणुस्सएहिं कामभोगेहिं

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] “दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं

प्रत सूत्रांक [५३]

दीप अनुक्रम [११०]

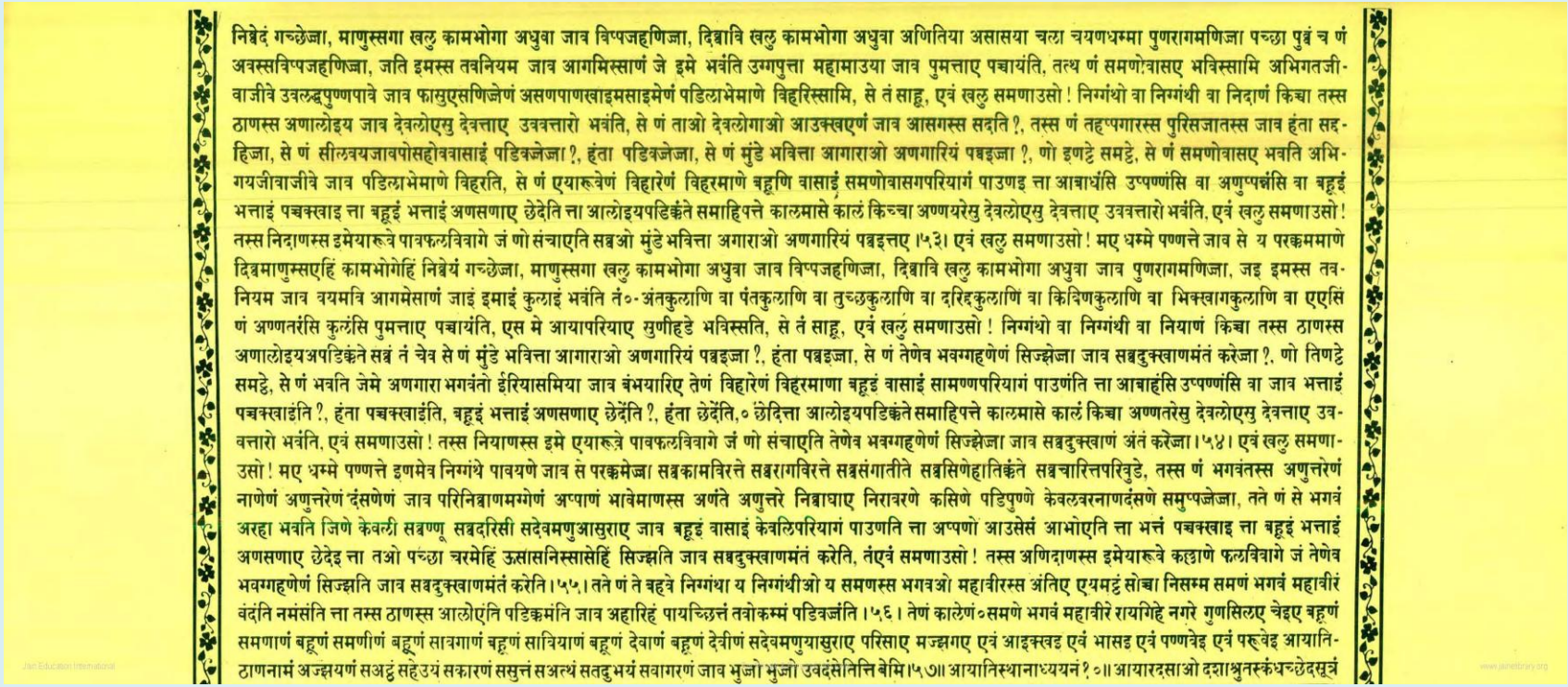

निव्वेदं गच्छेज्जा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा जाव विप्पजहणिज्जा, दिव्वावि खलु कामभोगा अधुवा अणितिया असासया चला चयणधम्मा पुणरागमणिज्जा पच्छा पुव्वं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जा, जति इमस्स तवनियम जाव आगमिस्साणं जे इमे भवंति उग्गपुत्ता महामाउया जाव पुमत्ताए पच्चायंति, तत्थ णं समणोवासए भविस्सामि अभिगतजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे जाव फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेमाणे विहरिस्सामि, से तं साहू, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथो वा निग्गंथी वा निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइय जाव देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव आसगस्स सदति ?, तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजातस्स जाव हंता सद्दहिज्जा, से णं सीलव्वयजावपोसहोववासाइं पडिवज्जेज्जा ?, हंता पडिवज्जेज्जा, से णं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, से णं समणोवासए भवति अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूणि वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ त्ता आबाधंसि उप्पण्णंसि वा अणुप्पन्नंसि वा बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइ त्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेति त्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, एवं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति सव्वओ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।५३। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते जाव से य परक्कममाणे दिव्वमाणुस्सएहिं कामभोगेहिं निव्वेयं गच्छेज्जा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा जाव विप्पजहणिज्जा, दिव्वावि खलु कामभोगा अधुवा जाव पुणरागमणिज्जा, जइ इमस्स तवनियम जाव वयमवि आगमेसाणं जाइं इमाइं कुलाइं भवंति तं०-अंतकुलाणि वा पंतकुलाणि वा तुच्छकुलाणि वा दरिद्दकुलाणि वा किविणकुलाणि वा भिक्खागकुलाणि वा एएसिं णं अण्णतरंसि कुलंसि पुमत्ताए पच्चायंति, एस मे आयापरियाए सुणीहडे भविस्सति, से तं साहू, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथो वा निग्गंथी वा नियाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंते सव्वं तं चेव से णं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा ?, हंता पव्वइज्जा, से णं तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेज्जा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, से णं भवति जेमे अणगारा भगवंतो ईरियासमिया जाव बंभयारिए तेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति त्ता आबाहंसि उप्पण्णंसि वा जाव भत्ताइं पच्चक्खाइंति ?, हंता पच्चक्खाइंति, बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति ?, हंता छेदेंति,० छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, एवं समणाउसो ! तस्स नियाणस्स इमे एयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ।५४। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे जाव से परक्कमेज्जा सव्वकामविरत्ते सव्वरागविरत्ते सव्वसंगातीते सव्वसिणेहातिक्कंते सव्वचारित्तपरिवुडे, तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं जाव परिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जेज्जा, तते णं से भगवं अरहा भवति जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सदेवमणुआसुराए जाव बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणति त्ता अप्पणो आउसेसं आभोएति त्ता भत्तं पच्चक्खाइ त्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ त्ता तओ पच्छा चरमेहिं ऊसासनिस्सासेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति, तंएवं समणाउसो ! तस्स अणिदाणस्स इमेयारूवे कल्लाणे फलविवागे जं तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति ।५५। ततेणं ते बहवे निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति त्ता तस्स ठाणस्स आलोएंति पडिक्कमंति जाव अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जंति ।५६। तेणं कालेणं०समणे भगवं महावीरे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं साविआणं बहूणं देवाणं बहूणं देवीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए एवं आइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ आयातिठाणनामं अज्झयणं सअट्ठं सहेउयं सकारणं ससुत्तं सअत्थं सतदुभयं सवागरणं जाव भुज्जो भुज्जो उवदंसेतित्ति बेमि।५७॥ आयातिस्थानाध्ययनं १०॥ आयारदसाओ दशाश्रुतस्कंधच्छेदसूत्रं

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादित: (आगमसूत्र ३७)

“दशाश्रुतस्कन्ध” परिसमाप्त:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

37

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

“दशाश्रुतस्कन्ध-छेदसूत्र” [मूलं एव]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

“दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं” नामेण

परिसमाप्त:

Remember it’s a Net Publications of ‘jain_e_library’s’